राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 न्यूजीलैंड ने दूसरा वनडे 84 रन से जीता | सम्पादकीय अमेरिकी धमकी से पहले भी भारत... | बीएसएनएल ने जियो से 1,757 करोड़ रुपए... 5

वर्ष 19 ● अंक 77 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online | ग्वालियर, गुरूवार 03 अप्रैल 2025 | email - hindustanexpressbhopal@gmail.com | मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

गृहमंत्री ने कहा- कांग्रेस ने मुसलमानों को डराने का काम करके वोट बैंक बनाने का काम किया

वक्फ संशोधन बिल लोकसभा में पेश

आर.एन.एस

नई दिल्ली। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को वक्फ संशोधन बिल 2024 लोकसभा में पेश किया। किरण रिजिजू ने इसे उम्मीद (यूनीफाइड वक्फ मैनेजमेंट इम्पावरमेंट, इफिशिएंसी एंड डेवलपमेंट) नाम दिया है।

समाचार लिखे जाने तक बिल को केंद्र की सरकार में शामिल टीडीपी, जेडीयू और एलजेपी ने समर्थन दिया। शिवसेना यूबीटी सांसद अरविंद ने अपने भाषण में ये क्लियर नहीं किया कि वे बिल के पक्ष में है या विरोध में।गृह मंत्री अमित शाह ने कहा- वक्फ

में गैर इस्लामिक नहीं आएगा। ऐसा कोई प्रोविजन भी नहीं है। वोट बैंक के लिए माइनॉरिटीज को डराया जा रहा है।

शाह ने कहा एक सदस्य ने कह दिया कि यह बिल माइनॉरिटीज स्वीकार नहीं करेगी। क्या धमकी दे रहे हो भाई। संसद का कानून है, स्वीकार करना पड़ेगा।

बिल पर चर्चा में रिजिजू ने 58 मिनट अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने 5 मार्च 2014 को 123 प्राइम प्रॉपर्टी को दिल्ली वक्फ बोर्ड को ट्रांसफर कर दीं। ऐसा लोकसभा चुनाव से ठीक पहले अल्पसंख्यक वोटों के लिए किया गया, पर चुनाव हार गए।

रिजिजू ने कहा- अगर हमने आज यह संशोधन बिल पेश नहीं किया होता, तो जिस इमारत में हम बैठे हैं, उस पर भी वक्फ संपत्ति होने का दावा किया जा सकता था। अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार सत्ता में नहीं आती तो कई अन्य संपत्तियां भी गैर-अधिसूचित हो गई होतीं।

भाजपा सांसद ने कहा- वक्फ के खौफ से भारत के लोग आजादी चाहते हैं।

शाह बोले- राम मंदिर बनाने की बात आई तो कहा गया कि खून की नदियां बह जाएंगी, मुसलमान सड़क पर उतर आएगा। ट्रिपल तलाक, सीएए के केस में ऐसा कहा गया कि मुसलमान की नागरिकता जाएगी। अगर 2 साल में एक भी मुसलमान की नागरिकता गई हो तो सदन के पटल पर रखेंगे। धारा 370 पर क्या-क्या कह ते थे।

आज उमर अब्दुल्ला सीएम हैं, विकास हो रहा है। कांग्रेस ने मुसलमानों को डराने का काम करके वोट बैंक बनाने का काम किया। इस देश के नागरिक को, किसी भी धर्म का हो, कोई आंच नहीं आएगी। ये नरेंद्र मोदी सरकार है। ये सालों से जातिवाद और तुष्टिकरण पर काम करते आए हैं। अपने परिवार की पॉलिटिक्स को आगे बढ़ाया है। 2014 से जातिवाद-तुष्टिकरण-परिवार को नरेंद्र मोदी सरकार ने खत्म करके, विकास की राजनीति को बढ़ावा दिया है। 3 टर्म मोदीजी को जिताया है और 3 टर्म भाजपा की सरकार बनने वाली है।

शाह ने कहा-कई मुसलमान भाई हैं जो वक्फ कानून के दायरे में नहीं आना चाहते। वोहरा, पसमांदा, शिया आदि कई हैं। कोई भी मुसलमान चैरिटेबल ट्रस्ट के तहत अपनी संपत्ति दर्ज करा सकता है।

रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 की सफलता पर सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधिपति श्री जितेन्द्र कुमार माहेश्वरी ने सभी का आभार जताया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधिपति श्री जितेन्द्र कुमार माहेश्वरी ने अपनी माँ स्व. श्रीमती मोहनप्यारी देवी महेश्वरी जी की स्मृति में मध्यप्रदेश शासन, रोटरी अंतर्राष्ट्रीय डिस्ट्रिक्ट 3080 एवं 3053, राजकृष्ण तन्खा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 की सफलता पर आभार व्यक्त किया है। अपने आभार प्रदर्शन में न्यायाधिपति श्री जितेन्द्र कुमार माहेश्वरी ने कहा है कि शिविर में अपनी सेवायें देने वाले समस्त डॉक्टर्स, पैरामेडिकल स्टाफ, जिला प्रशासन, रोटरी के सदस्य, एनसीसी, एनएसएस व स्काउट के कैडेट्स, जन अभियान परिषद्, सभी सामाजिक संस्थाएं, मुख्यमंत्री जी व जनता जनार्दन का मैं

हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। सभी ने जिस तरह तन-मन-धन से पीड़ित मानवता की सेवा की वह न सिर्फ सराहनीय है अपितु अनुकरणीय भी है। उन्होंने कहा कि मुरैना के लोग सेवाभावी हैं यह किसी से छुपा नहीं है। मैं आशा व्यक्त करता हूँ कि भविष्य में भी वे अपनी सेवाभावी भावना का इसी तरह परिचय देते रहेंगे। उन्होंने कहा कि 8 दिनों तक चले इस शिविर में लगभग 2,15,804 मरीजों की ओपीडी में जांच व परिक्षण किया गया और 3248 ऑपरेशन किये गये जिसमें आंख, स्त्रीरोग, सर्जरी, ईएनटी, हड्डी रोग, दर्द निवारण, डेण्टल एवं बच्चों के ऑपरेशन शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इस शिविर से लाखों लोग लाभान्वित हुए। निःसंदेह पीड़ित मानवता की सेवा करना इस शिविर के माध्यम से सार्थक हुआ।

ग्वालियर के लिए फोरलेन बाईपास स्वीकृत करने पर केन्द्रीय मंत्री सिंधिया ने केन्द्रीय मंत्री गडकरी का आभार व्यक्त किया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

नईदिल्ली। केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया ने केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी का ग्वालियर के पश्चिमी हिस्से में 28.516 किमी लंबाई के एक्सेस कंट्रोल्ड 4-लेन बाईपास के निर्माण हेतु 1347.6 करोड़ रुपए की स्वीकृति प्रदान करने पर हृदय से आभार व्यक्त किया है।

केन्द्रीय मंत्री सिंधिया ने कहा कि अपनी ऐतिहासिक विरासत, संस्कृति एवं कला के लिए प्रसिद्ध ग्वालियर शहर आज देशभर में पर्यटन, शिक्षा आदि के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना रहा है। वर्तमान में ग्वालियर शहर में नवीन एयरपोर्ट टर्मिनल भवन, नवीन रेलवे स्टेशन बिल्डिंग, ऐलीबेटिड रोड जैसे विकास कार्य चल रहे हैं। इन सब विकास कार्यों का लाभ सम्पूर्ण ग्वालियर-

चम्बल की जनता को मिलेगा। इसी क्रम में दिनांक 31.01.2024 को आपके द्वारा 10 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न सड़क परियोजनाओं का शिलान्यास कर मध्य प्रदेश की जनता को जो सौगात दी गई है, उसके लिए हृदय से धन्यवाद करता हूँ। इस अमृतकाल में ग्वालियर एवं पूरे चम्बल संभाग को विकास की तीव्र धारा से जोड़ने के लिए मेरे अनुरोध पर आपके द्वारा 4,822 करोड़ रुपये की लागत से आगरा-ग्वालियर एक्सप्रेस-वे, 995 करोड़ रुपये की लागत से ग्वालियर वेस्टर्न बायपास एवं 11,669 हजार करोड़ रुपये की लागत से अटल एक्सप्रेस-वे स्वीकृत किए गए हैं।

वर्तमान समय में तीनों प्रोजेक्टों के कुछ मुद्दे जैसे बजट, राष्ट्रीय राजमार्ग की घोषणा और एलाइंटमेंट फाइनेलाइजेशन का अतिशीघ्र हल निकालना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे कि यह कार्य समय पर पूर्ण कर राष्ट्र को समर्पित कर सकें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके असीम स्नेह और सहयोग से ग्वालियर-चम्बल की जनता इन विकास कार्यों के माध्यम से खुशहाली के नए आयाम को छू सकेगी।

एलओसी पर सेना ने 5 घुसपैठिए मार गिराए

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर सेना ने 4-5 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार गिराया। हालांकि, इसे लेकर सेना का आधिकारिक बयान नहीं आया है। घटना मंगलवार शाम को पुंछ में नियंत्रण रेखा पर कृष्णा घाटी सेक्टर के फॉरवर्ड एरिया में हुई। रुष्ट से सटे इलाके में 3 माइन ब्लास्ट हुए और पाकिस्तान की ओर से फायरिंग भी हुई थी। दावा है कि इसी समय आतंकियों ने घुसपैठ की कोशिश की थी। भारतीय सेना ने जवाबी फायरिंग की थी। जिसमें 4 से 5 घुसपैठियों मारे गए। फायरिंग और ब्लास्ट को लेकर सेना से दैनिक भास्कर ने बात की। सेना ने कहा- एक अप्रैल को एलओसी के उस पार से पाकिस्तानी सेना ने घुसपैठ की कोशिश की। इसके कारण कृष्णा घाटी सेक्टर में एक माइन ब्लास्ट हुआ।

रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 की सफलता पर विस अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने स्व.श्रीमती मोहनप्यारी देवी महेश्वरी जी की स्मृति में मध्यप्रदेश शासन, रोटरी अंतर्राष्ट्रीय डिस्ट्रिक्ट 3080 एवं 3053, राजकृष्ण तन्खा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 की सफलता के लिए अपनी सेवायें देने वाले समस्त डॉक्टर्स, पैरामेडिकल स्टाफ, जिला प्रशासन, रोटरी के सदस्य, एनसीसी, एनएसएस व स्काउट के कैडेट्स, जन अभियान परिषद्, सभी सामाजिक संस्थाएं, मुख्यमंत्री जी व जनता जनार्दन का हृदय से आभार व्यक्त किया है।

उन्होंने कहा कि 8 दिनों तक चले इस शिविर में लगभग 2,15,804 मरीजों की ओपीडी में जांच व परिक्षण किया गया और 3248 ऑपरेशन किये गये जिसमें आंख, स्त्रीरोग, सर्जरी, ईएनटी, हड्डी रोग, दर्द निवारण, डेण्टल एवं बच्चों के ऑपरेशन शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इस शिविर से लाखों लोग लाभान्वित हुए। निःसंदेह पीड़ित मानवता की सेवा करना इस शिविर के माध्यम से सार्थक हुआ। अंत में विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने पुनः सभी सहयोग करने वाले लोगों का हृदय से आभार व्यक्त किया है।

स्व. श्रीमती मोहन प्यारी देवी माहेश्वरी की स्मृति में आयोजित रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 में सहयोग करने वाले व्यापारियों व समाजसेवियों का विस अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह ने किया सम्मान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। स्व. श्रीमती मोहनप्यारी देवी जी माहेश्वरी की स्मृति में विवेक तन्खा फाउंडेशन, रोटरी व जिला प्रशासन के सहयोग से जिला मुख्यालय पर 26 मार्च से 02 अप्रैल तक वृहद स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में चम्बल-ग्वालियर संभाग के सभी लोगों को स्वास्थ्य शिविर में लाभान्वित हुए। उक्त उद्गार विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने गत दिवस पुलिस परेड ग्राउण्ड मुरैना में रोटरी कैम्प में सहयोग करने वाले व्यापारियों व समाजसेवियों को सम्मानित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर महापौर श्रीमती शारदा सोलंकी, जिला पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती आरती गुर्जर, कलेक्टर अंकित अस्थाना, सीईओ जिला पंचायत कमलेश कुमार भार्गव, रोटरी के पदाधिकारी भूपेन्द्र जैन, डॉ. संजीव बांदिल सहित विभिन्न प्रांतों से पधारे चिकित्सक और उनकी टीम एवं मेघा शिविर में सहयोग करने वाले समस्त पदाधिकारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान जिन व्यापारियों का सम्मान किया गया है, उनमें श्री नारायणहरी गुप्ता- गुप्ता सोलवेंट मुरैना, सुरेशचन्द जिंदल सुक्खा जी बीआर ऑयल्स मुरैना, संजय माहेश्वरी पराग एडिबल मुरैना, संजय अग्रवाल कैट जिलाध्यक्ष मुरैना डीके एडिबल्स, श्री गिर्राज सिंघल गणेश जी सोलवैक्स मुरैना, अनिल गोयल अल्फ्री शांति सोलवेंट मुरैना, मनोज अग्रवाल एमपी एडिबल्स मुरैना, शिवकांत पोरसा आरबी ऑयल्स, महेश अग्रवाल मुरैना महेश एडिबल्स आदि शामिल हैं। यहां यह बताना भी आवश्यक होगा कि उक्त सभी व्यापारियों व समाजसेवियों ने रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 की सफलता में अपना विशेष सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि रोटरी मेगा शिविर में भिण्ड, मुरैना, श्योपुर, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना और अशोक नगर आदि के लोगों ने कैम्प में पहुंचकर लाभ लिया। कैम्प का मकसद था कि जरूरतमंद लोगों को लाभान्वित करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि कैम्प के पूर्व विभिन्न जिलों में लोगों के पंजीयन किये गये थे, जिनमें 2 लाख 15 हजार 804 लोगों के पंजीयन किये गये थे। उनमें से 3248 लोगों के ऑपरेशन भी कराये गये है।उन्होंने कहा कि इस शिविर में समस्त पदाधिकारियों ने बढ़-चढ़कर सहयोग किया है, मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। कार्यक्रम में सभी ने सहयोग किया है, मरीजों को लाने से लेकर अन्य व्यवस्था में लगे हुये कर्मचारियों ने जी जान से भरपूर सहयोग दिया है। कार्यक्रम के अंत में वृंदावन से आये कलाकारों ने फूलों की होली खेली। विधानसभा अध्यक्ष ने सभी पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

भाजपा की विचारधारा एवं बाबा साहब के आदर्श और विचारों को समाज के अंतिम छोर तक पहुंचाएं कार्यकर्ताः हरिशंकर खटीक

हर्षोल्लास से मनाएं पार्टी का स्थापना दिवस, अंबेडकर जयंती की तैयारियों में जुट जाएं कार्यकर्ता

बस्तियों का दौरा कर स्वच्छता अभियान में भाग लें पार्टी पदाधिकारी : देवेंद्र सिंह नरवरिया

भारत भाजपा संगठनत्मक कार्यक्रमों की तैयारी को लेकर जिला स्तरीय बैठक सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भिण्ड। भारतीय जनता पार्टी, चंबल संभाग के संभागीय संगठन प्रभारी एवं विधायक हरिशंकर खटीक में जिले की संस्कृति गार्डन में बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी युवाओं के परम मित्र हैं और उनकी ऊर्जा, नए विचारों और नवाचारों को राजनीति व सुशासन में स्थान देने के प्रति संकल्पित हैं। उनका नेतृत्व समावेशिता और सशक्तिकरण का प्रतीक है, जहाँ नई पीढ़ी की भागीदारी राष्ट्र निर्माण को नई ऊंचाइयों पर ले जा रही है।इन्ही आदर्शों पर आधारित भाजपा परिवार केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा का संकल्प है, जिसे युवा शक्ति अधिक सशक्त बना रही है। विधायक एवं संभागीय संगठन प्रभारी श्री खटीक ने कहा कि बुथ के व्हाट्सअप और लाभार्थी प्रमुख 'मन की बात' कार्यक्रम में लोगों को जोड़ें। कार्यकर्ता 6 अप्रैल को पार्टी का स्थापना दिवस और 14 अप्रैल को भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती की तैयारियों में जुट जाएं। मंडल समितयों में महिलाओं की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि 6 अप्रैल को पार्टी का स्थापना दिवस मनाने के लिए विशेष तैयारियां करें और अपने निवास और पार्टी कार्यालय पर पार्टी का ध्वज लगाकर पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाएं। कार्यालय की सजावट कर रंगोली सजाएं तथा मिठाई बांटें। सेल्फी लेकर उसे सोशल मीडिया पर ''हैशटैग बीजेपी फॉर विकसित भारत'' के साथ पोस्ट करें।

» बस्तियों में स्वच्छता व सेवा कार्यों में जुटें पदाधिकारी

संभागीय प्रभारी श्री खटीक ने कहा कि 6 एवं 7 अप्रैल को बूथ स्तर पर और 8-9 अप्रैल को मंडल व विधानसभा स्तर पर भाजपा की चुनावी सफलता, संगठनात्मक विस्तार, भारतीय राजनीति में भाजपा द्वारा लाया गया परिवर्तन एवं प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी के साथ विकसित भारत की ओर यात्रा जैसे विषयों पर नए प्राथमिक सदस्यों का सम्मेलन आयोजित करना सुनिश्चित करें। 07 से 12 अप्रैल के बीच जिला पदाधिकारी, जन प्रतिनिधि व मंडल अध्यक्ष दिन में 8 घंटे ''बस्ती चलो अभियान'' के तहत सेवा बस्ती का दौरा कर मंदिर, अस्पताल, स्कूल व गलियों में स्वच्छता अभियान में भाग लें। इस दौरान विभिन्न योजनाओं के 10 लाभार्थियों से मिलकर उनसे बातचीत करें, आंगनवाड़ी केंद्र, स्कूल, पशु चिकित्सालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व पंचायत कार्यालय का दौरा कर जल संरचनाओं की सफाई में सहभागिता करें। स्थानीय निवासियों की चौपाल का आयोजन तथा अलग-अलग समुदाय के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के घर पहुंचना है। वरिष्ठ पार्टी कार्यकर्ता, मीसा बंदी तथा कारसेवकों का सम्मान करने के साथ बूथ समितियों की बैठक आयोजित करना है।

» बाबा साहब की प्रतिमाओं को सफाई कर मनाएं दीपोत्सव

भाजपा प्रदेश महामंत्री विधायक एवं संभागीय संगठन प्रभारी हरिशंकर खटीक ने कहा कि भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के पूर्व 13 अप्रैल को उनकी प्रतिमाओं की सफाई करना तथा संध्या के समय दीपोत्सव मनाना है। 14 अप्रैल को बाबा साहब की प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि अर्पित कर संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ करना है। आंगनबाड़ी केंद्रों और अनुसूचित जाति बस्तियों के स्कूल परिसरों की सफाई एवं सामुदायिक सुविधाओं का रखरखाव किया जाए। 15 से 25 अप्रैल के बीच समाज के विभिन्न वर्गों के वरिष्ठों के साथ कम से कम 2 सत्रों की जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन कर कांग्रेस द्वारा किए गए बाबा साहब के अपमान और भाजपा द्वारा दिए जा रहे सम्मान और जिस तरह से कांग्रेस ने संविधान से खिलवाड़ किया तथा भाजपा ने संविधान के प्रति जो सम्मान प्रदर्शित किया है, उस पर विस्तार से चर्चा की जाए। उन्होंने कहा कि पार्टी पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी का शताब्दी वर्ष समारोह मना रही है, इसके लिए पार्टी कार्यकर्ता श्रद्धेय अटल जी के पत्र, फोटो, वीडियो आदि के माध्यम से नए कार्यकर्ताओं को अवगत कराएं। संभागीय प्रभारी श्री खटीक ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचना ही अति आवश्यक है जिसमें उन्होंने आगामी संगठन आत्मक कार्यक्रमों का प्रतिवेदन जिला इकाई की बैठक में प्रस्तुत किया जिसमें अटल जी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में अटल जी के साथ रहने वाले वरिष्ठ नेताओं का सम्मान बिहार दिवस एवं पार्टी के स्थापना दिवस से लेकर के बाबा साहब की जन्म जयंती तक कार्यक्रमों को कार्यकर्ता जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी हमारी मन रूपी है जिसे हम सम्मान अवश्य करें क्योंकि हम अनुशासित और विचार भाव से काम करने वाले कार्यकर्ता है।

6 अप्रैल को जिले के 1480, बुथों पर भाजपा बनाएगी पार्टी का स्थापना दिवसः देवेंद्र सिंह नरवरिया भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष देवेंद्र सिंह नरवरिया ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 6 अप्रैल को भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस जिले के 29 मंडलों के सभी 1480 बूथ पर पार्टी के कार्यकर्ता स्थापना दिवस बनाकर पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संगोष्ठी आयोजित करेंगे और पार्टी का झंडा वंदन भी करेंगे। जिसकी प्रभावी तैयारी स्थानीय समिति से लेकर जिला मंडल एवं ग्राम पंचायत के प्रत्येक बूथ पर करना है। उन्होंने कहा की 14 अप्रैल को संविधान के रचयिता बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की जन्म जयंती को जिले के सभी मंडलों में आयोजित करना है और उनकी विचारधारा और अंत्योदय को जन-जन तक पहुंचाना ही पार्टी के कार्यकर्ता की अहम भूमिका होगी।

» स्थापना दिवस को कार्यकर्ता नीचे स्तर तक पहुंच कर संगठन को करें मजबूतः जयप्रकाश राजौरिया

भारतीय जनता पार्टी ग्वालियर जिला अध्यक्ष एवं जिले के प्रभारी जयप्रकाश राजोरिया ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक विचार परिवार है 6 अप्रैल को स्थापना दिवस है कार्यकर्ता नीचे स्तर तक इस कार्यक्रम के माध्यम से संगठन को मजबूती प्रदान करें।

» कांग्रेस ने बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की विचारधारा को लेकर कभी काम नहीं कियाः राकेश शुक्ला

भाजपा की जिला स्तरीय बैठक में मध्य प्रदेश सरकार के एक कैबिनेट मंत्री राकेश शुक्ला ने भी संबोधित करते हुए संगठन की विचारधारा एवं सरकार की जान योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कार्यकर्ताओं को कहा कि नीचे स्तर तक योजनाओं को ले जाकर जनता को जिसका लाभ देना है इस अवसर पर मनकी बात कार्यक्रम के प्रभारी, अर्पित मुदगल ने संबोधित किया। बैठक का सफल संचालन जिले के महामंत्री एवं बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जन्म जयंती समारोह के जिला प्रभारी मनोज अनंत एवं आभार व्यक्त जिला उपाध्यक्ष एवं पार्टी के स्थापना दिवस के जिला प्रभारी उपेंद्र शर्मा ने आभार व्यक्त किया सभी अतिथियों ने भारत माता एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के छाया चित्रों पर दीप प्रज्वलित एवं माल्यार्पण करते हुए शुभारंभ किया इस अवसर पर पूर्व विधायक प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य शिव शंकर समाधिया पूर्व जिला अध्यक्ष केशव सिंह भदौरिया प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य मायाराम शर्मा प्रदेश कार्यकारिणी की सदस्य श्रीमती कृष्णाकांता तोमर पूर्व जिला अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा राजे, विशेष रूप से मंच पर उपस्थित थे बैठक में जिला एवं मंडल पदाधिकारी तथा सभी जनप्रतिनिधि विशेष रूप से मौजूद थे।

» भाजपा की स्थापना दिवस एवं बाबा साहब अंबेडकर जी की जयंती को प्रभावी बनाने के लिए मंडलों की बैठक आज

भारतीय जनता पार्टी जिला इकाई की बैठक में तय किया गया कि आगामी संगठनत्मक कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए जिले के सभी 29 मंडलों की एक साथ बैठकर 03 अप्रैल को संपन्न की जाएगी जिसमें आगामी कार्यक्रमों की कार्य योजना तैयार होगी।

तकनीक के दौर में शिखर पर हिंदी रंगमंच

रंगमंच ने हमेशा से भारतीय समाज को न केवल मनोरंजन प्रदान किया है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय रंगमंच के इतिहास और संस्कृति का महत्वपूर्ण दिन है ''हिंदी रंगमंच दिवस''। इस दिन हम उस ऐतिहासिक यात्रा को याद करते हैं, जो अपने शुरुआती दिनों से लेकर आज तक तय की है। आइये, जानते हैं अतीत से आज तक हिंदी रंगमंच की अविराम यात्रा का जीवन में महत्व और उसका प्रभाव।

कला,संस्कृति और संघर्ष का संगम रंगमंच

हिंदी रंगमंच दिवस पर विशेष

देश में आजादी से पूर्व जब फिल्मों का अविष्कार नहीं हुआ था, तब लोगों के मनोरंजन का साधन रंगमंच ही हुआ करता था। रंगमंच एक ऐसी कला है जो बिना किसी स्क्रीन के साक्षात मनोरंजन उपलब्ध कराता है। आज भले ही सिनेमा ने टीवी सीरियल और अब वेब सीरीज के रूप में अपना विस्तार कर लिया हो लेकिन अभिनय का आधार अभी भी रंगमंच को ही माना जाता है।

3 अप्रैल को प्रतिवर्ष हिन्दी रंगमंच दिवस मनाया जाता है। इसी दिन 1868 की शाम बनारस में पहली बार पंडित शीतला प्रसाद त्रिपाठी कृत हिन्दी नाटक 'जानकी मंगल' का मंचन हुआ। त्रिपाठी ने शास्त्रीय संस्कृत नाटक, पारंपरिक रामलीला और यूरोपीय नाट्य तत्वों को मिलाकर 'जानकी मंगल' तैयार किया था। जून 1967 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास में पहली बार इस नाटक के मंचन को प्रामाणिक तौर पर पुष्ट किया।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिन्दी रंगमंच का जनक माना जाता है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के भी जनक हैं। हिंदी रंगमंच की स्थापना में काशी नरेश ईश्वरी नारायण सिंह की अहम भूमिका रही। उन्होंने ही अपने दरबारी कवि गणेश को नाटक लिखने को कहा था। गणेश ने जो नाटक लिखा वह पारंपरिक और छंदबद्ध था।

हिंदी रंगमंच का इतिहास बहुत पुराना और समृद्ध है। भारतीय रंगमंच की जड़ें प्राचीन नाट्यशास्त्र में हैं, जिसे भर्तृहरी और भरत मुनि ने स्थापित किया। हालांकि, हिंदी रंगमंच को एक स्पष्ट पहचान 19वीं शताब्दी में मिली, जब हिंदी साहित्य के उभरने के साथ रंगमंच का भी विकास हुआ। हिंदी रंगमंच के प्रारंभिक दिनों में शास्त्रीय नृत्य-नाटकों का प्रमुख स्थान था, जो धार्मिक और सामाजिक संदेशों को प्रस्तुत करते थे।

हिंदी रंगमंच, संस्कृत नाट्य, लोक रंगमंच एवं पारसी थियेटर के आधार पर आगे बढ़ा है। भारत में संस्कृत रंगमंच का दौर गुज़र जाने के बावजूद भी लोक रंगमंच की परंपरा चलती रही। यह नौटंकी, स्वांग और रामलीला के रूप में आगे बढ़ती रही। इसी प्रकार पारसी रंगमंच की भी हिंदी रंगमंच के विकास में एक बड़ी भूमिका रही है।

19वीं शताब्दी में हिंदी रंगमंच का परिष्करण तब हुआ जब भारतीय उपमहाद्वीप में थिएटर का पश्चिमी प्रभाव बढ़ने लगा।

इसी दौरान पहली बार हिंदी में नाटक लिखे गए, जिनमें राजा शंकरलाल, मोहनलाल और सुमित्रानंदन पंत जैसे लेखक शामिल थे। इस समय के रंगमंच में परंपरागत संस्कृत नाटकों के तत्वों को देखा गया, जो बाद में हिंदी नाटकों के रूप में विकसित हुए। हिंदी रंगमंच के विकास में बलिया नाट्य समाज की बड़ी भूमिका मानी जाती है। वर्ष 1884 ई. में भारतेन्दु उसी समय 'सत्य हरिश्चंद' तथा 'नीलदेवी' नाटकों का मंचन किया गया था। भारतेन्दु ने राजा हरिश्चंद की भूमिका का अभिनय किया था। यह नाटक उस समय में बहुत लोकप्रिय हुआ था। इसके बाद से ही हिंदी नाटक मंचन की परम्परा चल पड़ी।

20वीं शताब्दी के मध्य में हिंदी रंगमंच ने एक नया मोड़ लिया। यह वह समय था जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अपने चरम पर था और रंगमंच को एक सशक्त माध्यम के रूप में देखा गया। इस समय हिंदी रंगमंच को एक नई दिशा मिली और थिएटर को सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर जोर देने का एक प्रमुख मंच के रूप में देखा जाने लगा। प्रमुख रंगमंच हस्तियां हबीब तनवीर, विजय तेंदुलकर और शंकर पटनायक ने अपने नाटकों के माध्यम से समकालीन समाज की विद्रूपताओं और संकटों को उजागर किया।

हबीब तनवीर, जो 'तुमरी अमरी' और 'आगरा बाजार' जैसे नाटकों के लिए प्रसिद्ध हैं, ने भारतीय रंगमंच में एक नया प्रयोग किया। उनके नाटकों में भारतीय लोक कला और शास्त्रीय नृत्य की समावेशिता ने हिंदी रंगमंच को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। इसी तरह विजय तेंदुलकर के नाटक जैसे 'गांधीवाद' और 'शंकर' ने भारतीय समाज की राजनीति और संस्कृति पर गहरी छाप छोड़ी।

यही कारण है कि हिंदी रंगमंच का समाज के साथ गहरा संबंध है। रंगमंच न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक बदलाव का एक सशक्त साधन भी है। हिंदी रंगमंच के नाटक समाज के संवेदनशील मुद्दों को उठाते हैं और जनता को जागरूक करते हैं। चाहे वह महिलाओं के अधिकारों का मुद्दा हो, जातिवाद या फिर सांस्कृतिक पहचान, रंगमंच ने हमेशा से इन मुद्दों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है।

विजय तेंदुलकर के 'सखाराम बाइंडर' ने भारतीय समाज में व्याप्त सामजिक कुरीतियों और भ्रष्टाचार को उजागर किया, जबकि रामलीला जैसे धार्मिक नाटकों ने समाज को नैतिकता और धार्मिकता के प्रति जागरूक किया।

रंगमंच ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध व्यक्त करने का भी एक महत्वपूर्ण कार्य किया। इस समय के नाटक 'वह रात' और 'नमक हराम' ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जनमानस के बीच फैलाने में मदद की।

हिंदी रंगमंच का इतिहास बहुत ही समृद्ध और विविधतापूर्ण रहा है। इसने समाज में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ कला और संस्कृति के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रंगमंच ने हमेशा अपने समय के मुद्दों को उठाया और समाज को समझने, पहचानने और बदलने की प्रेरणा दी।

हिंदी रंगमंच दिवस इस कला के प्रति हमारी श्रद्धा और सम्मान को व्यक्त करने का एक अवसर है। मौजूदा दौर में हिंदी रंगमंच एक नई दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है। अब यह केवल पारंपरिक नाटकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने आधुनिकता और प्रयोगवाद के तत्वों को भी अपनाया है।

रंगमंच के इस नए रूप में वे विषय शामिल हैं, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को चुनौती देते हैं, जैसे शहरीकरण, पर्यावरण संकट और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ। इसमें आधुनिक एआई तकनीक का समावेश हो रहा है। जिससे रंगमंच की न केवल प्रस्तुति बल्कि उसका कलेवर भी बदला है। अब थिएटर में डिजिटल तकनीक, दृश्य कला और प्रयोगात्मक सेट डिज़ाइन का उपयोग किया जा रहा है।

इससे हिंदी रंगमंच को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। देश के विभिन्न रंगमंच समारोहों और महोत्सवों में हिंदी नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं, जो भारतीय संस्कृति और समाज को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करते हैं।

रंगमंच दिवस प्रति वर्ष एक निश्चित थीम पर मनाया जाता है। इस बार 2025 में 'रंगमंच और शांति की संस्कृति' थीम निर्धारित की गई है। यह थीम रंगमंच की भूमिका को शांति और आपसी समझ को बढ़ावा देने वाले माध्यम के रूप में उजागर करती है।

कह सकते हैं कि हिंदी रंगमंच दिवस कला, संस्कृति और धरोहर को सम्मानित करने का दिन है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि रंगमंच केवल एक मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रति एक महत्वपूर्ण दायित्व निभाने का कार्य करता है। इस दिन हम रंगमंच के उन सभी कलाकारों को याद करते हैं जिन्होंने अपनी कला के माध्यम से समाज में बदलाव लाने की कोशिश की और जिनकी मेहनत ने हिंदी रंगमंच को ऊंचाइयों तक पहुंचाया। यही वजह है कि तकनीक के दौर में शिखर पर विराजमान है 'हिंदी रंगमंच'।

इसलिए हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित और प्रोत्साहित करेंगे, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसका लाभ उठाकर समाज में बदलाव ला सकें।

प्रस्तुति
-डॉ. केशव पाण्डेय-
(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

शासकीय उ.मा. विद्यालय ढोढर में मना प्रवेशोत्सव

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

श्योपुर। 02 अप्रैल को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ढोढर में प्रवेश उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में श्योपुर कलेक्टर अर्पित वर्मा, जिला पंचायत सीईओ अतेंद्र गुर्जर, भाजपा जिला अध्यक्ष शशांक भूषण, श्योपुर पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गुड्डी बाई, आदिवासी सहरिया विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष तुरसनपाल बरैया, भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक गर्ग, एसडीएम मनोज गढ़वाल, डीपीसी पी.एस. गोयल, बीईओ मधु शर्मा, जनपद सदस्य नरेश टैगोर, ढोढर सरपंच नारायण प्रसाद गोयल एवं अन्य अतिथिगण उपस्थित रहे। प्रचार्य राजेंद्र सिंह रावत द्वारा सभी अतिथियों का माला पहनकर स्वागत किया गया। कलेक्टर एवं अतिथियों ने विद्यालय के बच्चों के तिलक लगाकर एवं माला पहनाकर सत्र 2025-26 में नई कक्षा में प्रवेश के लिए स्वागत किया।

वक्फ संसोधन कानून बिल का पूरे देश ने स्वागत किया है: डॉ. सनवर पटेल

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में वक्फ बोर्ड संसोधन कानून लाया गया है। इस संशोधित कानून का देश ईमानदार मुस्लिम समाज ने ढोल नगाड़े बजाकर देश की सरकार का अभिनंदन किया है। मध्यप्रदेश वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सनवर पटेल ने नये बिल का स्वागत करते हुए कहा कि अब वक्फ बोर्ड की संपत्तियों पर अवैध कब्जा करने वाले माफियाओं से मुक्ति मिलेगी, वहीं गरीब निर्धन मुस्लिम परिवारों के लिए एक नई आशा की किरण जागेगी। डॉ. पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश में भी अब एक अभियान चला कर वक्फ बोर्ड की संपत्तियों पर कब्जा करने वाले माफियाओं को जल्दी ही बेदखल किया जायेगा और जरुरत पड़ी तो कानून के माध्यम से जेल भेजा जायेगा। वक्फ की संपत्तियों का उपयोग मुस्लिम समाज के उत्थान और स्वावलंबी बनाने के लिए किया जाएगा। शिक्षा के बड़े संस्थानों से चर्चा कर मुस्लिम समाज के बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर, और भारत रत्न अब्दुल कलाम जैसा बनने की ललक जगाई जायेगी। मध्यप्रदेश वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष पटेल ने भोपाल में मुस्लिम समाज द्वारा आज नये बिल के समर्थन और स्वागत किया गया और अभिनंदनीय है, उन्होंने कहा वह स्वयं उन सभी के बीच मिठाईयां लेकर जायेंगे।

सुब्बाराव जी शांतिकुंज आते रहे हैं: संतोष कुमार सिंह

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। वेद मूर्ति तपोनिष्ठ ऋषि युग्म पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं माता भगवती देवी शर्मा जी की कर्म स्थली, सप्त ऋषियों की तपस्थली, धरती पर स्वर्ग के अवतरण पर कार्यरत् गायत्री तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रमुख संतोष कुमार सिंह से शांतिकुंज स्थित उनके कार्यालय में जहां से अखिल विश्व गायत्री परिवार के इलेक्ट्रॉनिक चैनलों का संचालन किया जाता है, मुलाकात हुई। सौजन्य मुलाकात के समय जब भाईजी डॉ. एस.एन. सुब्बाराव जी का ज़िक्र हुआ तो अनायास ही उन्होंने कहा कि सुब्बाराव जी हमारे यहां कई बार आते रहे हैं। एचएल ग्रुप ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के संस्थापक शिक्षाविद् एल.एन. त्यागी ने उन्हें महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा मुरैना मध्य प्रदेश एवं नेशनल यूथ प्रोजेक्ट के द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी देते हुये संतोष कुमार सिंह को भाईजी की स्मृति मे आयोजित बाल आनंद महोत्सव 2024-25 स्मारिका भेंट की। क्षेत्र में संचालित गतिविधियों के समाचार संकलित कर अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र-पत्रिकाओं के लिए भेजने की बात कही।

शा.मा.वि. विद्यालय चम्बल कॉलोनी में स्कूल चलें अभियान में डिप्टी कलेक्टर प्रतिज्ञा शर्मा ने छात्र-छात्राओं को दिया मार्गदर्शन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। 01 अप्रैल 2025 से नवीन शिक्षण सत्र प्रारंभ हो चुका है। शासन के निर्देशानुसार वरिष्ठ अधिकारियों को विद्यालयों में प्रवेश उत्सव एवं स्कूल चलें अभियान के लिए छात्र एवं पालकों को मार्गदर्शन देने के लिए नियुक्त किया गया है। मध्य प्रदेश तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष रामनरेश दंडोतिया ने प्रेस को दी गई विज्ञप्ति में बताया कि जिलाधीश के निर्देश पर शासकीय माध्यमिक विद्यालय चंबल कॉलोनी मुरैना पर डिप्टी कलेक्टर श्रीमती प्रतिज्ञा शर्मा द्वारा प्रवेश उत्सव एवं स्कूल चलें अभियान में उपस्थित रहकर बालक-बालिकाओं पालकों एवं शिक्षकों को मार्गदर्शन दिया। श्रीमती शर्मा द्वारा कहा गया कि शिक्षा भविष्य की नींव है, इससे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, तरक्की के द्वार खुलते हैं। सभी शिक्षकों और पालकों से कहा गया कि इस अभियान में कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। सभी का शत-प्रतिशत प्रवेश हो इसके लिए आप निरंतर पालकों से संपर्क करें। हम भी आपके साथ सहयोग करेंगे और शासन द्वारा निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है, जिसमें अनेक सुविधाएं विद्यार्थियों को दी जा रही हैं। जैसे- निःशुल्क पुस्तक, साइकिल वितरण, मिड डे मील एवं सभी को गणवेश दी जा रही है। इसका सभी लाभ उठाएं। इस अवसर पर विद्यार्थी पालक एवं समस्त विद्यालय का स्टाफ उपस्थित रहा- इनमें मुख्य रूप से रामनरेश दंडोतिया, संदीप यादव, अजय दंडोतिया, नीरू शर्मा,राजकुमारी शर्मा, रामप्यारी माहौर, आशा पाराशर, राममूर्ति शर्मा, मिथिलेश चौहान, मनोज शर्मा, नीलम शर्मा सहित समस्त बालक-बालिका, पालक उपस्थित रहे।

भीषण गर्मी शुरू होने से पहले हुई आधा दर्जन आगजनी की घटनायें

- जंगल जला, 200 हेक्टेयर वन क्षेत्र में नुकसान की खबर

ग्वालियर। अभी ठीक से भीषण गर्मी का सीजन शुरू ही नहीं हुआ है और जंगल में आधा दर्जन ऐसी आगजनी की घटनायें हो चुकी है। जिसमें दर्जनों एकड़ वनक्षेत्र राख हो गया। रोचक बात यह है कि शहर के आसपास के वन क्षेत्र में सर्वाधिक आग लगी है और नुकसान भी बहुत हुआ है। जबकि वन अधिकारियों के निर्देशन में मैदानी वन अमले ने एड़ी से चोटी की दम लगाई और रात दिन भी एक किया। उधर फायर बिग्रेड की गाड़ियां भी बुलाई गई। फिर भी सांतउ, नयागांव, बरई, घाटीगांव का सिमरिया वन क्षेत्र आदि में सर्वाधिक नुकसान होना बताया जा रहा है। जानकारी के अनुसार सांतउ, नयागांव, अजयपुर, मोहना, घाटीगांव का सिमरिया वनक्षेत्र, बरई, रायपुर सहित आधा दर्जन बीटों में आग लगी है। यह वह आगजनी की घटनायें हैं, जो केवन 5 से 7 दिन के अंदर लगी है। जंगल का यह वह एरिया है, जो शहर के आसपास का है। यहां बता दें कि अभी तक 40 डिग्री से उपर पारा नहीं पहुंचा है। फिर भी जंगल में आग लगने की खबरें हर रोज मिल रही है। यह सब शरारतीतत्वों की और इशारा करती है, क्योंकि अभी भीषण गर्मी का प्रकोप शुरू नहीं हुआ है। वहीं तापमान भी सामान्य पर है।

सर्वे इण्डिया फोरेस्ट की टीम करेगी सर्वे

भारतीय वन सर्वेक्षण जो पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार के अधीन एक संस्थान है। जिसके द्वारा जंगल में हरियाली का सर्वे कर वन आवरण आदि का आंकलन करती है। इसी उददेश्य के तहत आज गुरूवार को एक टीम ग्वालियर आ रही है। जिसके द्वारा सोनचिरैया अभ्यारण्य के वन क्षेत्र में सर्वे कार्य करेगी। जंगल की हरियाली के मूल्यांकन की रिपोर्ट तैयार कराई जायेगी। इण्डिया स्टेट आफ फोरेस्ट की रिपोर्ट वर्ष 2023 में सामने आई थी। हर दो साल में यह रिपोर्ट जारी होती है। इस साल 2025 में यह रिपोर्ट तैयार होनी है।

गाड़ियों में तोड़फोड़ करने वाला शहर में लौटते ही पकड़ा गया

ग्वालियर। 25 दिन पहले भाजपा नेता की गाडियों की तोडफोड़ कर फरार हुआ आरोपी जब पुलिस से भागते-भागते थक गया। जेब खाली हो गई तब उसे घर की याद सताने लगी। छिपते-छिपाते हुए वह घर जा रहा था कि तभी रास्ते में उसका सामना पुलिस से हो गया। पुलिस को देखते ही वह भागने लगा, लेकिन पुलिस अलर्ट थी और पांच मिनट की मशक्कत के बाद उसे दबोच लिया। उल्लेखनीय है कि थाटीपुर थाना क्षेत्र के शिव नगर कुम्हरपुरा निवासी देवेन्द्र कटारे पुत्र काशीराम कटारे भाजपा नेता हैं। 7-8 मार्च को उनकी कारों व अन्य भारी वाहनों में किसी सिरफिरे ने तोड़फोड़ की है। मामले का पता चलते ही वह मौके पर पहुंचे और वाहनों की हालत देखकर पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस ने जब आसपास लगे सीसीटीवी खंगाले तो पता चला कि वारदात को पास ही रहने वाले विवेक शर्मा ने अंजाम दिया था। इसके बाद से ही पुलिस उसकी तलाश कर रही थी, लेकिन वह ट्रक ड्राइवर दोस्त के साथ फरार हो गया था। इसके बाद से ही पुलिस उसकी तलाश में लगी थी। पूछताछ में सिरफिरे ने खुलासा किया है कि उसे रिश्तेदारी में जाने के लिए देवेन्द्र से कार मांगी थी, लेकिन उसने इनकार किया तो उसकी कारों की तोडफोड़ कर दी थी।

इनका कहना

थाटीपुर थाना क्षेत्र में आधा दर्जन वाहनों में तोडफोड़ करने वाले आरोपी को थाटीपुर थाना पुलिस ने पकड़ा है। पकड़े गए आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

धर्मवीर सिंह, एसएसपी

दांव लगाते पांच जुआरी पकड़े

ग्वालियर। ताश के पत्तों पर दांव लगा रहे पांच जुआरी पुरानी छावनी थाना पुलिस ने दबोचे है। पकड़े गए जुआरियों से पुलिस ने ताश के पत्तों के साथ ही नकदी बरामद की है। पुलिस अब पकड़े गए जुआरियों से फरार हुए उनके साथियों की जानकारी जुटाने में जुट गई है।

पुरानी छावनी थाना प्रभारी क्षमा राजौरिया ने बताया कि सूचना मिली थी कि जमाहर गांव में जुआ का फड लगा हुआ है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस को देखते ही जुआ खेल रहे जुआरी भागने लगे। जिनका पीछा कर पुलिस ने पांच जुआरी दबोच लिए। पकड़े गए, जुआरियों के खिलाफ पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस पूछताछ में पकड़े गए जुआरियों की कमल किशोर पुत्र रमेश सिह राजपूत निवासी पिपरौआ थाना चिनौर हाल यादव धर्मकांटा हजीरा, जयकुमार पुत्र बाबूलाल जाटव निवासी नाका चन्द्रवदनी, रमेश राठौर पुत्र रामपाल निवासी दुर्गापुरी गदाईपुरा हजीरा, मनीष पुत्र धन्नालाल नामदेव निवासी लखैरा गली घासमण्डी ग्वालियर और जण्डेल सिंह पुत्र सुंदर सिंह किरार निवासी गदाईपुरा हजीरा के रूप में हुई है।

पति-पत्नी ने साथ खाया खाना, पत्नी की मौत

ग्वालियर। साथ खाना खाने के बाद पति-पत्नी सोने चले गए। शाम को जब पति की आंख खुली तो पत्नी अचेत थी और उसके मुंह से झाग निकल रहे थे। घटना थाटीपुर थाना क्षेत्र के खलिफा कॉलोनी में मंगलवार की शाम की है। पत्नी की हालत देखकर पति उसे उपचार के लिए एक निजी अस्पताल ले गया, जहां पर उसकी हालत गंभीर देखकर उसे जेएएच रैफर किया। जहां पर महिला ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया है।

थाटीपुर थाना क्षेत्र के खलिफा कॉलोनी निवासी 35 वर्षीय गिरिजा धानुक पत्नी कमल धानुक गृहिणी है और उसका पति प्राइवेट जॉब करता है। बीते रोज दोपहर में दंपति ने साथ-साथ खाना खाया था और फिर सोने चले गए थे। शाम करीब छह बजे के करीब उनका बेटा घर लौटा तो माता-पिता सोते मिले। जब उसने मां को जगाने का प्रयास किया तो पता चला कि मां अचेत है और उसके मुंह से झाग निकल रहा है। इसका पता चलते ही उसने पिता को जगाया और गिरिजा को पिता-पुत्र अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां पर उसकी हालत गंभीर देखकर जेएएच रैफर किया। जहां पर उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। महिला की मौत का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया है। थाटीपुर थाना पुलिस का कहना है कि मर्ग कायम कर जांच की जा रही है। प्रारंभिक जांच में जहर से मौत की पुष्टि हुई है। मामले की जांच की जा रही है, जांच में जो तथ्य आएंगे उसके आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

नगर निगम वाहन और कार भिड़ी, हुआ विवाद

ग्वालियर। तेज रफ्तार आ रही कार व नगर निगम वाहन आमने-सामने आकर टकरा गए। घटना थाटीपुर थाना क्षेत्र के आकाशवाणी तिराहे पर बुधवार सुबह की है। घटना के बाद कार चालक और नगरनिगम चालक क्षतिगृस्त हुए वाहनों का हर्जाना मांगने पर आपस में भिड़ गए। देखते ही देखते वहां पर लोगों की भीड़ जुट गई और दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास किया। करीब आधा घंटा बीतने के बाद भी वह आपस में बहस करते रहे। हालांकि लोगों का कहना था कि बहस करने से अच्छा है कि थाने चले जाओं, लेकिन थाने जाने को वह तैयार नहीं थे। एक घंटा तक आपस में उलझने के बाद वह बिना शिकायत के चले गए।

दुकान से चोर समेट ले गए नकदी-सामान

ग्वालियर। एक दुकान के ताले चटकाकर चोर नकदी व सामान पार कर ले गए। घटना थाटीपुर थाना क्षेत्र के मौसम विभाग के सामने की है। घटना का पता सुबह चला जब व्यवसायी दुकान पर पहुंचा तो ताले टूटे हुए थे और अंदर सामान बिखरा पड़ा था। मामला समझ में आते ही पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर लिया है। बालाजी विहार कॉलोनी बड़ागांव निवासी कमलेश दीक्षित पुत्र योगेन्द्र दीक्षित व्यवसायी है और उनकी मौसम विभाग के पास किराना दुकान है। बीती रात वह दुकान का काम खत्म कर ताले लगाकर चले गए थे और आज सुबह जब वह दुकान पर पहुंचे तो ताले टूटे पड़े थे और दुकान से गुटखा, सिगरेट, नकदी सहित अन्य कीमती समान गायब था। मामला समझ में आते ही पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलत ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस अब चोरों का पता लगाने के लिए आस-पास लगे सीसीटीवी खंगाल रही है, जिससे चोरों का पता लगाया जा सकें।

अवैध गर्भपात मामले में पाँच लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज

ग्वालियर। गत 26 मार्च को गुड़ा गुड़ी का नाका कम्पू स्थित स्मार्ट सिटी हॉस्पिटल एण्ड मल्टीस्पेशिलिटी ट्रामा सेंटर में किए गए अवैध गर्भपात में लिप्त पाँच आरोपियों के खिलाफपुलिस थाना कम्पू में एफआईआर दर्ज कराई गई है। इन आरोपियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा-94 एवं गर्भ का चिकित्सकीय समापन अधिनियम 1971 की धारा-4 के तहत प्रकरण दर्ज किए गए हैं।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सचिन श्रीवास्तव ने बताया कि गत 26 मार्च को सूचना मिली थी कि स्मार्ट सिटी हॉस्पिटल एण्ड मल्टीस्पेशिलिटी ट्रामा सेंटर में अवैध गर्भपात किया जा रहा है। इस सूचना कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान को अवगत कराया गया। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने टीम के साथ तत्काल मौके पर पहुँचकर त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए। सीएमएचओ डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि इस क्रम में एमडी मेडीसिन डॉ. बिंदु सिंघल, जिला क्षय अधिकारी डॉ. विजय पाठक, डीएचओ-2 एवं पीसी-पीएनडीटी नोडल अधिकारी डॉ. प्रबल प्रताप सिंह, नर्सिंग होम शाखा प्रभारी जितेन्द्र सिंह तोमर व एमपीटीपी तथा पीसी-पीएनडीटी शाखा संजय जोशी मौके पर पहुँचे। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि दल द्वारा किए गए निरीक्षण के दौरान पाया गया कि इस नर्सिंग होम में जिला चिकित्सालय मुरैना में पदस्थ डॉ. नेहा नागौरी द्वारा एक महिला के गर्भ का समापन किया जा रहा है। मौके पर मौजूद मिली संबंधित महिला की सास ने जानकारी दी कि मेरी बहू के पूर्व से ही दो बेटियां हैं। तीसरे बच्चे का गर्भ समापन कराया गया है। जाँच में यह भी पता चला कि यह नर्सिंग होम बगैर पंजीयन के संचालित है।

दो अप्रैल की बरसी पर पुलिस रही अलर्ट

ग्वालियर। सात साल पहले दो अप्रैल को हुए दंगे की बरसी पर किसी तरह की परेशानी और स्थिति ना बिगड़े इसके लिए बुधवार तड़के से ही पुलिस अफसर और जवान अलर्ट थे। जिन इलाकों में दंगे हुए थे वहां लोगों में किसी प्रकार का कोई भय न हो और स्थिति सामान्य रहे इसलिए वहां पुलिस को तैनात किया गया था। इसके अलावा अन्य संवेदनशील इलाकों में पुलिस की नजर रही। एसएसपी धर्मवीर सिंह ने बताया कि दो अप्रैल को हुए दंगों की सातवीं बरसी पर लोगों को किसी प्रकार की परेशानी ना हो इसके लिए सुबह से ही पुलिस जवान और अफसर तैनात किए गए थे। वहीं अन्य संवेदनशील इलाकों में भी पुलिस का पहरा लगाया गया था, जिससे शहरवासी भय मुक्त रहें। दो अप्रैल 2018 को हुए दंगों का मुख्य केन्द्र थाटीपुर, मुरार और गोला का मंदिर के साथ ही इंदरगंज थाना क्षेत्र था और ये ही इलाके संवेदनशील थे और यहां पर किसी प्रकार का तनाव ना हो इसके लिए पुलिस जवान और अफसर मुख्य चौराहों पर तैनात रहे। सुरक्षा में चूक नहीं हो इसके लिए पुलिस अफसर लगातार राउण्ड लगाकर मॉनीटरिंग करते रहे।

सात शक्ति दीदियों ने पेट्रोल पम्पों पर संभाली फ्यूल डिलेवरी वर्कर की जिम्मेदारी

ग्वालियर । सामान्यतः पेट्रोल पंपों पर फ्यूल डिलेवरी वर्कर के रूप में पुरुष ही ज्यादा नजर आते हैं। पर ग्वालियर जिले में जिला प्रशासन के प्रोत्साहन से महिलायें भी यह जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभा रही हैं। बुधवार को जिले के 5 और व्यस्ततम पेट्रोल पंप पर 7 महिलाओं ने 'शक्ति दीदी' के रूप में फ्यूल डिलेवरी वर्कर का मोर्चा संभाल लिया है। जिला प्रशासन व पुलिस ने इन महिलाओं का हौंसला बढ़ाया है।

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने बुधवार को सचिन तेंदुलकर मार्ग पर डीबी सिटी के सामने स्थित साई हरिलीला पेट्रोल पंप पर श्रीमती लक्ष्मी सक्सेना एवं श्रीमती आरती सिसौदिया का स्वागत कर एवं उन्हें जैकेट पहनाकर शक्ति दीदी बनाया। इसी कड़ी में उन्होंने कलेक्ट्रेट के पीछे स्थित वैश्य एंड मुखर्जी पेट्रोल पंप पर श्रीमती रजनी नामदेव को यह जिम्मेदारी सौंपी। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीकृष्ण लालचंदानी, कार्यक्रम अधिकारी

महिला बाल विकास डी स जादौन व सहायक संचालक राहुल पाठक एवं सहायक जिला आपूर्ति अधिकारी सौरभ जैन मौजूद थे। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार व एसडीएम डबरा दिव्यांशु चौधरी ने डबरा स्थित विजय डीजल्स पंप पर सुश्री गांधारी बाथम एवं डबरा में ही पारशनाथ फिलिंग पेट्रोल पंप पर सुश्री खुशी सुबानी व सुश्री सीमा शाक्य को शक्ति दीदी की जिम्मेदारी सौंपी। संयुक्त कलेक्टर संजीव जैन ने भिण्ड रोड स्थित शारदा फ्यूल पेट्रोल पंप पर सुश्री आरती राठौर को फ्यूल डिलेवरी वर्कर का दायित्व सौंपा।

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान एवं पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने जिले के पेट्रोल पंप पर शक्ति दीदी के रूप में फ्यूल डिलेवरी वर्कर का काम कर रहीं महिलाओं की सुरक्षा का खास ध्यान रखा है। उन्होंने क्षेत्रीय थाना प्रभारी व पुलिस बल को इन पेट्रोल पंपों का लगातार भ्रमण करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही एक वॉट्सएप ग्रुप भी तैयार कराया है, जिसमें सभी शक्ति दीदी एवं संबंधित पुलिस थाना प्रभारी सहित अन्य अधिकारियों के फोन नम्बर जोड़े गए हैं। पेट्रोल पंप पर शक्ति दीदी सुविधाजनक तरीके से काम कर सकें। इसके लिये उनके कार्य का समय प्रातरू 9 बजे से सायंकाल 5 बजे तक रखा गया है।

एमआईसी ने फिर छह माह के लिये बढ़ाया अतिबल यादव का कार्यकाल

ग्वालियर। बुधवार को हुई नगर निगम की मेयर इन कार्उसिल की बैठक में शासकीय सेवकों की 30 जून अथवा 31 दिसम्बर को सेवानिवृत्ति के पश्चात आगामी तिथि पर वेतन वृद्धि की स्वीकृति प्रदान की गई है। इसके साथ ही रेत, भूसा, गिट्टी, पत्थर आदि के ऑफर बुलाये जाने पर भी सहमति दे दी गई है। इसके साथ ही लगातार चर्चा में रहने वाले सेवानिवृत्त अधिकारी डा. अतिबल यादव का कार्यकाल छह महीने के लिये एमआईसी ने फिर से बढ़ा दिया है।

मेयर इन कांउसिल की बैठक बुधवार को महापौर डॉ. शोभा सतीश सिंह सिकरवार की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में शासकीय सेवकों की 30 जून अथवा 31 दिसम्बर को सेवानिवृत्ति के पश्चात आगामी तिथि पर वेतन वृद्धि की स्वीकृति के संबंध में स्वीकृति प्रदान की गई। इसके साथ ही आउटसोर्स

अकुशल 1379 सफाई श्रमिकों की कार्य अवधि 4 माह अनुमोदन व आगामी कार्य अवधि बढ़ाये जाने एवं उस पर आने वाले व्यय की स्वीकृति के संबंध में प्राप्त प्रतिवेदन पर चर्चा उपरांत निविदा प्रक्रिया पूर्ण करने परिषद के लिए अग्रेशित किया गया है। बैठक में अधीक्षण यंत्री (संविदा) डॉ अतिबल सिंह यादव की संविदा अवधि में वृद्धि किये जाने के संबंध में प्राप्त निगमायुक्त के प्रतिवेदन पर चर्चा उपरांत 6 माह के लिए वृद्धि की स्वीकृति प्रदान की गई। ग्राम रोजगार सहायक (सहायक सचिव) के मानदेय वृद्धि के संबंध में निगमायुक्त के प्रतिवेदन पर चर्चा उपरांत प्रस्ताव को पूर्ण जानकारी के साथ पुनः आगामी बैठक में प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। ठेका पेड पार्किंग महाराज बाड़ा पर बड़ के पेड़ के नीचे दो पहिया वाहन वर्ष 2024-25 की शेष अवधि हेतु प्राप्त निविदा निरस्त करने तथा वर्ष 2025-26 हेतु नवीन ऑफर आमंत्रण की स्वीकृति बावत् निगमायुक्त के प्रतिवेदन पर चर्चा उपरांत स्वीकृति प्रदान की।

इसके साथ ही रेत, भूसा, गिट्टी, पत्थर आदि के ऑफर बुलाये जाने की स्वीकृति बाबत निगमायुक्त के प्रतिवेदन पर चर्चा उपरांत स्वीकृति प्रदान की। बैठक में मेयर इन कार्उसिल सदस्य अवधेश कौरव, नाथूराम ठेकेदार, शकील मंसूरी, विनोद यादव माठू, श्रीमती प्रेमलता धर्मेन्द्र जैन, श्रीमती संध्या सोनू कुशवाह, श्रीमती उपासना संजय यादव, निगम आयुक्त संघ प्रिय, अपर आयुक्त विजयराज, मुनीश सिंह सिकरवार, अनिल दुबे, अपर आयुक्त वित्त श्रीमती रजनी शुक्ला उपस्थित थे।

अपनी भारतीय परंपरा और संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी: आदर्श दीदी

- नववर्ष और चैत्र नवरात्रि पर ब्रह्माकुमारीज केंद्र पर हुआ स्नेह मिलन कार्यक्रम

ग्वालियर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्थानीय केंद्र प्रभु उपहार भवन माधौगंज केंद्र पर नववर्ष (विक्रम संवत 2082), गुडी पड़वा एवं चैत्र नवरात्रि के पावन उपलक्ष्य में स्नेह मिलन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में साइंस कॉलेज जनभागीदारी समिति अध्यक्ष एवं आर्किटेक्ट अजय बंसल, टी.एन.सी.पी. सयुंक्त संचालक कृष्णकांत कुशवाह, ब्रह्माकुमारीज केंद्र प्रमुख राजयोगिनी आदर्श दीदी, समाजसेविका श्रीमती आशा सिंह, कॉन्फिडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स ग्वालियर की संस्थापक सदस्य एवं महिला उद्यमी श्रीमती रीना गांधी, बीके डॉ. गुरचरण सिंह, प्रेरक वक्ता बीके प्रहलाद भाई उपस्थित थे। इस अवसर

पर देवी माँ की सुंदर चौतन्य झांकी भी लगाई भी लगाई गई थी। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की पूजा वंदना कर दीप प्रज्जवलन से हुआ।

ब्रह्माकुमारीज केंद्र प्रमुख राजयोगिनी बी.के. आदर्श दीदी ने सभी को नववर्ष एवं नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुये कहा कि हमें अपनी भारतीय परंपरा और संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी है। आज हम हिन्दू नववर्ष मना रहे है। हर भारतीय परिवार को अपने बच्चों आदि के साथ बडे ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिए। कार्यक्रम में अजय बंसल ने कहा कि जीवन में कुछ भी हो जाये घबराना नहीं चाहिए। कोई सब चीजें तय है अपना श्रेष्ठ कर्म करें और ईश्वर पर छोड़ दें। कार्यक्रम में रीना गाँधी ने कहा कि हम आत्मनिर्भर बनें और हम जिसकी मदद कर सकते हैं उसकी मदद करें ईश्वर ने हमें इस लायक बनाया है। यही इस नववर्ष हमारी शुभकामना है। कार्यक्रम में श्रीमती आशा सिंह ने कहा कि हमारा नववर्ष शक्ति पर्व के साथ शुरू होता है, खेतों में लहलहाती हुई फसल हमें सपन्न होने का सन्देश देती है। कार्यक्रम में बीके डॉ गुरचरण सिंह ने संस्थान के द्वारा की जा रही गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन करते हुए बीके प्रह्लाद भाई ने कहा कि जीवन में जो चाहिए वह दूसरों को देना प्रारंभ करें, तो आप हर सम्पन्न हो जाएंगे। अंत में सुनीता सुरेन्द्र बैस, रवि चित्रा, गोसाबी, विनोद पलक ढींगरा, शीला प्रभु दयाल, राजू, भारती श्रीवास्तव, सविता तिवारी आदि को सम्मानित भी किया गया। बीके जीतू भाई ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कांग्रेस ने पुतला फूंककर सौरभ की जमानत का विरोध किया

ग्वालियर । परिवहन विभाग के भ्रष्ट आरक्षक रहे सौरभ शर्मा को दी गई जमानत के विरोध में कांग्रेस ने फूलबाग पर पुतला दहन कर सौरभ शर्मा की जमानत रद्द करने की मांग की है। इस मौके पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे।

पुतला दहन के अवसर पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा ने कहा कि यह पुतला दहन एक गंभीर मुद्दे पर अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए हैं। यह केवल एक प्रदर्शन नहीं, बल्कि न्याय के लिए हमारी आवाज है। हम सभी जानते हैं कि सौरभ शर्मा पर गंभीर अपराधों के आरोप लगे हैं। ऐसे मामलों में कठोर कार्रवाई की आवश्यकता होती है, लेकिन दुर्भाग्यवश, उन्हें जमानत दे दी गई। यह न्याय व्यवस्था की कमजोरी नहीं, बल्कि उन ताकतों का प्रभाव दिखाता है जो कानून को अपने फायदे के लिए तोड़ने-मरोड़ने का प्रयास कर रही हैं।

पुतला फूंकने वालों में पूर्व अध्यक्ष चन्द्रमोहन नागोरी, प्रदेश महासचिव सुनील शर्मा, राहुल शर्मा, ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष प्रभूदयाल जौहरे, जिला कार्यवाहक अध्यक्ष महाराज सिंह पटेल, वीर सिंह तोमर, चतुर्भुज धनोलिया, प्रदेश प्रवक्ता धर्मेन्द्र शर्मा, संगठन मंत्री सुरेन्द्र यादव, उदल सिंह, जेएच जाफरी, सरमन सिंह राय, जयराज सिंह, इन्द्रजीत सिंह, सेवादल अध्यक्ष हरेन्द्र सिंह गुर्जर, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष राजेश खान, नवीन भदकारिया, मुनेन्द्र भदौरिया, लक्ष्मीनारायण कुशवाह, उपेन्द्र सिंह राजपूत पिंटू, अनूप शिवहरे, विनोद जैन, हितेन्द्र यादव, महादेव अपोरिया, राजेश बाबू, राकेश शर्मा, कैलाश चावला, उदय राज योगी, अब्दुल हमीद पप्पू, मंगल यादव, तरुण यादव, अतुल पवार सहित अनेक कांग्रेसजन शामिल थे।

अवंतिका गैस ने निगम को भेंट किए पांच टिपर वाहन

ग्वालियर । अवंतिका गैस लिमिटेड ने अपनी सीएसआर मद से नगर निगम को पांच सीएनजी टिपर वाहन दिए हैं। जिसको महापौर डॉ. शोभा सतीश सिंह सिकरवार, एमआईसी सदस्य अवधेश कौरव, नाथूराम ठेकेदार, शकील मंसूरी, विनोद यादव माठू, श्रीमती प्रेमलता धर्मेन्द्र जैन, श्रीमती संध्या सोनू कुशवाह, श्रीमती उपासना संजय यादव, निगम आयुक्त संघ प्रिय, अपर आयुक्त मुनीष सिंह सिकरवार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। नोडल अधिकारी कार्यशाला पुष्पेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि नगर निगम के स्वच्छता के कार्य में लगे वाहनों में पांच सीएनजी वाहन और शामिल हो गए हैं। यह वाहन अवंतिका गैस लिमिटेड ने अपनी सीएसआर मद से नगर निगम को दिए हैं तथा यह वाहन 45 लाख 80 हजार रूपये के हैं। इन टिपर वाहनों का उपयोग डोर टू डोर कचरा संग्रहण के लिए किया जाएगा। वाहनों में चार प्रकार के कचरे के लिए अलग अलग बॉक्स बनाए गए है।

जलकर जमा करने पर मिलेगी छूट

ग्वालियर। जलकर वसूली के लक्ष्य की पूर्ति एवं आम नागरिकों की सुविधा के लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 की जलकर अग्रिम राशि जमा करने पर 10 प्रतिशत राशि की छूट 15 अप्रैल तक दी जा रही है। कार्यपालन यंत्री जलप्रदाय संजीव गुप्ता ने बताया कि आम नागरिकों की सुविधा को देखते हुए वर्ष 2025-26 (12 माह) के जल कर की अग्रिम राशि जमा करने पर 10 प्रतिशत की छूट का लाभ जल उपभोक्ताओं को 1 से 15 अप्रैल तक जलकर जमा करने पर दिया जा रहा है।

पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह ने श्रद्धासुमन अर्पित किये

ग्वालियर। कांग्रेस विधायक व पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह ने गत दिवस बसपा नेता कल्याण सिंह कंषाना के अल्कापुरी स्थित निवास पर पहुंचकर उनकी स्व. माताजी के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किये। इस अवसर पर उनके भाई केदार कंषाना सहित बड़ी संख्या में परिजन उपस्थित थे। जयवर्धन सिंह श्री कंषाना के बेहद करीबी माने जाते है और लगातार उनके निवास पर आना जाना भी रहता है। पिछले महीने श्री कंषाना की माताजी श्रीमती भूरि बाई का बीमारी के चलते निधन हो गया था।

मोहना में पुजारी के साथ मारपीट, गिरफ्तारी के लिये ज्ञापन सौंपा

ग्वालियर। मोहना के बड़ा गांव में कुछ आपराधिकतत्वों ने गांव के पुजारी महेश शर्मा की मारपीट कर दी थी। इतना ही नहीं बड़ी संख्या में गुंडों ने सामूहिक हमला करते हुये पुजारी को गंभीर रूप से घायल कर दिया। अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए सर्व ब्राह्मण महासभा का एक प्रतिनिधि मंडल सभा के अध्यक्ष राजेश नायक के साथ

घाटीगांव एसडीपीओ शेखर दूबे से मिला और त्वरित कार्यवाही की मांग की। इस मामले में तीन अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। शेष की जल्द गिरफ्तारी की जायेगी। इस मामले में श्री नायक का कहना है कि आरोपी चंद्रपाल धाकड़, रामौतार धाकड़ व इनके साथियों की गिरफ्तारी की मांग की गई है। पुलिस अधिकारियों ने जल्द गिरफ्तारी का भरोसा दिलाया है।

संपादकीय

अमेरिकी धमकी से पहले भी भारत पर हुआ है बड़ा प्रभाव, रूस से कच्चा तेल खरीदना अब हो सकता है मुश्किल

अमेरिका की नई धमकी से भारत की चिंता जरूर कुछ बढ़ गई है, क्योंकि सचमुच अगर वह ऐसा करता है, तो भारत की तेल कंपनियों के लिए रूस से तेल खरीदना मुश्किल हो जाएगा। अभी भारत सबसे अधिक कच्चा तेल रूस से खरीदता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप शायद विश्व राजनीति में धमकी की नई परंपरा कायम करने पर तुले हैं। अब उन्होंने रूस से कच्चा तेल खरीदने वालों को धमकाया है कि जो ऐसा करेगा, वह अमेरिका में कारोबार नहीं कर पाएगा। ऐसे देशों पर पच्चीस से पचास फीसद तक अतिरिक्त शुल्क लगाया जाएगा। यह धमकी उन्होंने इसलिए दी है कि रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त करने की दिशा में न तो रूस और न ही यूक्रेन ने अपेक्षित सहयोग का रुख दिखाया है। इससे ट्रंप निराश हैं। पिछले महीने यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की को बुला कर ट्रंप ने कड़े शब्दों में फटकार लगाई थी। यूक्रेन को दी जाने वाली अमेरिकी मदद पर रोक लगा दी गई है। इससे उम्मीद बनी थी कि रूस, अमेरिका की युद्ध विराम संबंधी शर्तें मान जाएगा, मगर उसने अपनी शर्त रख दी कि सभी नाटो देश यूक्रेन को सैन्य मदद और गोपनीय सूचनाओं पर रोक लगाएं, तभी वह युद्ध विराम पर विचार कर सकता है। यह अमेरिका के लिए कठिन ही नहीं, शायद कभी पूरी न हो सकने वाली शर्त है। ऐसे में ट्रंप ने अब रूस पर नकेल कसने का रास्ता चुना है। मगर यह रास्ता भी उनके लिए कितना आसान और कारगर साबित होगा, कहना मुश्किल है। अमेरिका की नई धमकी से भारत की चिंता जरूर कुछ बढ़ गई है, क्योंकि सचमुच अगर वह ऐसा करता है, तो भारत की तेल कंपनियों के लिए रूस से तेल खरीदना मुश्किल हो जाएगा। अभी भारत सबसे अधिक कच्चा तेल रूस से खरीदता है। पहले ईरान और खाड़ी देशों से खरीदता था, मगर अमेरिकी प्रतिबंध के बाद भारतीय तेल कंपनियों ने वहां से तेल खरीदना बंद करके रूस से खरीदना शुरू कर दिया था। इस तरह कच्चे तेल की कीमत बढ़ने से महंगाई तेजी से बढ़ेगी, जिसका अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। हालांकि भारतीय तेल कंपनियां अभी समझ नहीं पा रही हैं कि अमेरिका का अतिरिक्त शुल्क लगाने का ढांचा क्या होगा, इसलिए वे इसे अधिक चिंता का विषय नहीं मान रही हैं, पर जिस तरह पहले ही पारस्परिक शुल्क नीति के तहत अमेरिका ने भारी शुल्क थोप दिए हैं, उससे भारत के लिए संतुलन बिठाना कठिन हो रहा है। यह नया शुल्क और परेशान करने वाला साबित हो सकता है। मगर ट्रंप प्रशासन के लिए भी अपनी शुल्क नीति पर लंबे समय तक कायम रह पाना कठिन होगा। इसे लेकर अमेरिका में ही विरोध हो रहा है। इसलिए कि पारस्परिक शुल्क के चलते अमेरिकी कारोबार पर भी बुरा असर पड़ सकता है। जिन चीजों के लिए अमेरिका दूसरे देशों पर निर्भर है, उनकी कीमतें बढ़ेंगी, तो वहां भी महंगाई बढ़ेगी। ऐसे में अमेरिकी लोगों का विरोध लंबे समय तक सहन कर पाना ट्रंप के लिए आसान नहीं होगा। वहां के मध्यावधि चुनाव में ट्रंप की पार्टी के लिए भी मुश्किलें बढ़ सकती हैं। फिर यह भी कि ट्रंप के नए ऐलान से रूस कितने दबाव में आ पाएगा, कहना मुश्किल है। यूक्रेनी राष्ट्रपति के साथ जैसा व्यवहार ट्रंप ने किया, उससे ज्यादातर पश्चिमी देश नाराज हैं। इसलिए रूस-यूक्रेन संघर्ष रुकवाने का उनका दावा कमजोर पड़ता जा रहा है। दोनों देशों के बीच चल रहा संघर्ष निश्चित रूप से रुकना चाहिए, यह दुनिया की बेहतरी के लिए बहुत जरूरी है। मगर धौंस और धमकी के सहारे ऐसा हो पाना शायद ही संभव हो, इसके और उलझने की आशंका बनी रहेगी।

बदलाव के दौर में गांवों के अस्तित्व का संकट, शहरी संस्कृति की तरफ बेतहाशा दौड़ रहे लोग

> गांव शब्द आते ही हम और आप खेतों, किसानों, ग्रामीण महिलाओं, और गलियों में खेलते बच्चों की कल्पना करने लग जाते हैं। हालांकि अब गांव भी वैसे नहीं रहे जैसे कि हमारी कल्पनाओं में अब तक रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में जिस तरह सामाजिक और आर्थिक जटिलताएं रही हैं, उसके मद्देनजर देखें तो कुछ मायनों में यह काफी अच्छा है कि हमारे गांव आज की दुनिया से जुड़ रहे हैं।

भले ही शहर के किराए के कमरों में छोटी-सी घुटन भरी जगह में रहना पड़े, सिर्फ शहर में रहने के लिए लोग मजबूरीवश खुला आकाश भूल जाते हैं। छोटी-छोटी चीजों के लिए संघर्ष करना उनकी दिनचर्या का भाग बन जाता है। लेकिन जब कुछ लोग अपने बच्चों को शहर दे पाते हैं तब भी वे गांव वापस लौटना पसंद नहीं करते हैं।

गांव शब्द आते ही हम और आप खेतों, किसानों, ग्रामीण महिलाओं, और गलियों में खेलते बच्चों की कल्पना करने लग जाते हैं। हालांकि अब गांव भी वैसे नहीं रहे जैसे कि हमारी कल्पनाओं में अब तक रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में जिस तरह सामाजिक और आर्थिक जटिलताएं रही हैं, उसके मद्देनजर देखें तो कुछ मायनों में यह काफी अच्छा है कि हमारे गांव आज की दुनिया से जुड़ रहे हैं। आज की दुनिया तकनीक और प्रचार पर चलती है। गांव के लोग भी समझ रहे हैं कि अगर दुनिया में टिके रहना है तो हमें इन सभी चीजों को अपनाना होगा।

मगर इस क्रम में जो दिशा अपनाई गई है और जो रफ्तार है, इससे जो समझ विकसित और मजबूत हो रही है, उसने गांव को गांव से दूर कर दिया है। जहां गांव की सरलताएं शहरों में पहुंचनी चाहिए थी, वहां शहर गांवों तक पहुंच गए हैं। इमारतें बन गईं, खेत कट गए, जंगलों का हाल बेहाल हो गया। यहां तक कि दूरदराज के गांवों की दशा यह होती गई है कि वे खाली होते जा रहे हैं। इसके अलावा, गांव की सरलता और सहजता अब धीरे-धीरे गायब होती दिखने लगी है। गांव जिस तरह शहरों से जुड़ रहे हैं, वहां तक तो ठीक है, लेकिन इस क्रम में जो चीजें पीछे छूट गई या जो लोग पिछड़ गए, उनका अस्तित्व संकट में पड़ गया है। वे गांव कई-कई स्तर पर खाली हो गए, क्योंकि उनके बाशिंदे रोजगार, नई दुनिया की तलाश, बराबरी के माहौल और अपने भीतर के गांव को निकालने शहर आ गए। शहर में बसने का एक मुख्य कारण शिक्षा भी रहा। शिक्षा, रोजगार, नौकरी, पैसा, शोहरत सभी शहर में है, तो फिर प्रश्न है कि गांव का क्या होगा? गांव को किसने इस हाल में छोड़ दिया कि लगातार 'अहा ग्राम्य जीवन' के राग और महिमामंडन के बीच गांव लाचार होते चले गए? आज भी ऐसे गांवों को देखा जा सकता है जिनका ज्यादातर हिस्सा खाली हो गया है। कुछ लोगों ने वहां बड़े-बड़े आशियाने बसाए, लेकिन अब वहां सिर्फ पक्षी बैठते हैं। उन घरों को देखकर ऐसा लगता है कि उन्हें मेहनत और आशा के साथ बनाया गया था, लेकिन उन सब पर शहर हावी हो गया और गांव पीछे छूट गया। ऐसे तमाम लोग हैं, जिनके भीतर अपने कुछ मित्रों, रिश्तेदारों का शहरी जीवन देखकर घर के प्रति लगाव कमजोर पड़ गया और वे शहरी संस्कृति की तरफ बेतहाशा दौड़ने लगे। इनके मूल में एक वजह यह भी है कि गांव में रोजगार की कमी है। सरकारें आईं और गईं। योजनाएं भी लाई गईं और उन्हें कार्यान्वित करने की कोशिश आज भी जारी है, लेकिन छोटे-मोटे कामों, इंसानी और छोटे कारोबारियों के अतिरिक्त अधिकतर गांवों की दशा ठीक नहीं है। ऐसे में मजबूर परिवार गांव छोड़ देते हैं। किसी के गांव से शहर चले जाने पर कई बार सवाल तो उठाया जाता है, लेकिन शहर का रुख करने की वजहों पर शायद गौर नहीं किया जाता। जो लोग गांव में जीवन के जीवंत अनुभवों के साथ जीते हैं, उनके सामने आखिर कैसी परिस्थितियां पैदा होती हैं कि वे गांव छोड़ कर बाहर निकल जाते हैं? भले ही शहर के किराए के कमरों में छोटी-सी घुटन भरी जगह में रहना पड़े, सिर्फ शहर में रहने के लिए लोग मजबूरीवश खुला आकाश भूल जाते हैं। छोटी-छोटी चीजों के लिए संघर्ष करना उनकी दिनचर्या का भाग बन जाता है। लेकिन जब कुछ लोग अपने बच्चों को शहर दे पाते हैं तब भी वे गांव वापस लौटना पसंद नहीं करते हैं। शहर उनकी आस बन जाता है और गांव उनका इतिहास हो जाता है। वे अब कभी नहीं लौटना चाहते उन घरों में जिनमें वे कभी बहुत खुश रहते थे और खुले गलियारों में जहां उन्हें सांस लेने के लिए शुद्ध हवा मिलती थी। ऐसा क्यों हुआ? इसके बहुत से कारण हो सकते हैं, लेकिन शहरों का भी कम बुरा हाल नहीं है। भीड़ बढ़ने से शहरों की स्थिति बहुत खराब हो गई गई है। शहर में प्रदूषित हवा, अस्वच्छता, कंक्रीट की इमारतें, वृक्षविहीन सड़कें, वाहनों का शोर, मनुष्य की टकराहट और भावनाओं के आवेग का प्रदूषण है। इसे चाहकर भी मिटाना संभव नहीं है। ऐसे में क्या किया जाए? क्यों न गांव के खालीपन को भरा जाए और वहां भी शहर जैसा विकास किया जाए, ताकि लोग गांव छोड़कर न जाएं? रोजगार, शिक्षा, कारोबार, तकनीक नई दुनिया से गांव का परिचय करवाकर ऐसा संभव हो सकता है। फिर लोग लौटने लगेंगे अपने खाली पड़े आशियानों में, खेतों में रौनक होगी, जंगल फिर बढ़ेंगे, शहर भी सांस लेने लगेंगे और सब ठीक होने लग जाएगा। शहर और गांव अलग-अलग होंगे, पर कदम-ताल मिला सकेंगे। गांव के बच्चे भी शहर के बच्चों की तरह पढ़ सकेंगे, तकनीकों से अवगत हो सकेंगे। गांव का सूनापन भर उठेगा, आंगन खिल उठेगा, वही शहर का शोर-शराबा थोड़ी राहत देगा और कोलाहल शांति में तब्दील हो जाएगा। शहर स्वच्छ और सुंदर बनेंगे, गांव न केवल खेती, बल्कि हर क्षेत्र में आगे होंगे, इसके लिए दोनों ही व्यवस्थाओं को संरक्षित करने का प्रयास करना होगा। न केवल सरकार को, बल्कि व्यक्तिगत तौर पर हम सबका कर्तव्य है कि गांव और शहर की व्यवस्था को सही रूप में लाएं। इसी में राष्ट्र का विकास निहित है। ये ही हमारे राष्ट्र को गांव की संस्कृति की तरफ लेकर चलेगा, जिसमें प्रेम, करुणा, संवेदना, कल्याण और मानवीय हित निहित होगा।

जम्मू-कश्मीर में दम तोड़ता अलगाववाद, बढ़ने लगी पाकिस्तान की मुश्किलें

द्विपक्षीय संबंधों की दृष्टि से भी देखें तो पाकिस्तान को दबाव में बनाए रखने और अधिक भाव न देने की नीति इस अर्थ में भी कारगर रही कि सीमा पर हिंसक घटनाएं कम हुई हैं। वर्ष 2020 में चीन द्वारा पूर्वी लद्दाख में सैन्य मोर्चा खोलने के समय भी पाकिस्तान ने पश्चिमी मोर्चे पर कोई आक्रामक मुद्रा नहीं अपनाई । केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हाल में संसद को एक सुखद सूचना दी। उन्होंने बताया कि जम्मू-कश्मीर में अलगाववादी संगठन हुर्रियत कांफ्रेंस के कुछ धड़ों ने भारत के प्रति निष्ठावान रहने का निर्णय किया है। इन गुटों में कश्मीर के सबसे कट्टरपंथी और पाकिस्तानपरस्त समझे वाले नेता सैयद अली शाह गिलानी के राजनीतिक उत्तराधिकारी मोहम्मद शफी की पार्टी डेमोक्रेटिक पीपुल्स मूवमेंट भी शामिल है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि कश्मीर के कट्टरपंथी अलगाववादी इस्लामिक गुटों पर अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद से की गई सख्ती के अपेक्षित परिणाम सामने आ रहे हैं। अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद सरकार ने हुर्रियत में शामिल कई अलगाववादी गुटों पर अवैध गतिविधि निवारण अधिनियम यानी यूएपीए के अंतर्गत प्रतिबंध लगा दिया था। इसके साथ ही पाकिस्तान से और विभिन्न प्रकार की अवैध गतिविधियों से प्राप्त होने वाले काले धन के प्रवाह को रोकने के लिए भी कठोर कार्रवाई की गई। गत 12 मार्च को ही मीरवाइज उमर फारूक की अवामी एक्शन कमेटी पर प्रतिबंध लगाकर स्पष्ट संकेत दिया गया कि कश्मीर में अलगाववाद की कोई दुकान चलने नहीं दी जाएगी, चाहे उसे चलाने वाला कितना ही बड़ा नाम क्यों न हो। इस बीच अमित शाह ने कई बार दोहराया कि अनुच्छेद 370 की किसी भी सूरत में वापसी नहीं होने वाली। उनके और मोदी सरकार के इस संकल्प ने अलगाववादियों का मनोबल तोड़ने का काम किया है। इसका यह नतीजा निकला है कि राजनीतिक महत्वाकांक्षा रखने वाले कश्मीरी मुस्लिम नेताओं को समझ आ गया कि यदि राजनीतिक वजूद बनाए रखना है तो अलगाववादी राजनीति को छोड़ना ही होगा। मोदी सरकार की यह नीति मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार के एकदम उलट है। मनमोहन सरकार तो हुर्रियत के धड़ों में यही ढूंढ़ने का प्रयास करती थी कि उनमें नरम अलगाववादी कौन हैं। मनमोहन सरकार ने संभवतः उन्हें नरम अलगाववादी माना जो कश्मीर की आजादी का राग तो छेड़ते थे, परंतु सीधे तौर पर पाकिस्तान में शामिल होने की बात नहीं करते थे। मनमोहन सरकार ने कभी यह सोचा ही नहीं कि कश्मीर की आजादी कभी संभव नहीं हो सकती, क्योंकि भारत से अलग होते ही पाकिस्तान बलात उस पर कब्जा कर लेगा। नरम अलगाववाद को हवा देने वाली मनमोहन सरकार की इस विवेकशून्य नीति के दायरे में यासीन मलिक तक आ गए थे। यासीन मलिक वही दुर्दांत आतंकी था, जिसके हाथ वायु सेना अधिकारियों के खून से सने थे। उस दौर में ऐसे आतंकी की प्रधानमंत्री आवास पर मेहमाननवाजी की जाती थी। जब भारत सरकार ही हुर्रियत के अलगाववादी नेताओं को कश्मीर पर चर्चा के लिए बुलाकर उन्हें कश्मीरियों के प्रतिनिधि के रूप में मान्यता देती थी तो पाकिस्तान भी द्विपक्षीय वार्ता में हुर्रियत को पक्ष बनाने की जिद करता था। दिलचस्प बात यह थी कि हुर्रियत चुनावों का बहिष्कार करती थी, फिर भी उसे कश्मीरियों का प्रतिनिधि माना जाता था। स्पष्ट है कि सड़कों पर दंगा-फसाद करने की हुर्रियत की क्षमता से ही उसे कश्मीरियों का प्रतिनिधि मान लिया गया था। इसके चलते भारत को गालियां देने और स्वयं को पाकिस्तानी बताने वाले सैयद अली शाह गिलानी जैसे हुर्रियत नेताओं की दिल्ली में खूब आवभगत होती रही। उनका इलाज भी भारत के बेहतरीन अस्पतालों में कराया जाता था। उनके बच्चों की पढ़ाई भी नामी-गिरामी देसी-विदेशी संस्थानों में होती रही। अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुर्रियत के वे सुनहरे दिन लद गए। अब हुर्रियत के राष्ट्रविरोधी नेताओं को जेल में रहना पड़ रहा है या फिर भारत के प्रति निष्ठावान रहने की कसमें खानी पड़ रही हैं। यह सब साबित करता है कि दशकों तक इन अलगाववादियों को लेकर अपनाई लचर नीतियों ने ही कश्मीर में अलगाववाद को मजबूत किया था। इस आलोक में पूर्ववर्ती सरकारों की पाकिस्तान नीति की भी तुलनात्मक समीक्षा आवश्यक है। बार-बार भारत में आतंकी हमले कराने के बावजूद पाकिस्तान से बात इसलिए की जाती थी, क्योंकि सरकारें कहीं न कहीं मानती थीं कि पाकिस्तान में ही यह क्षमता है कि वह हुर्रियत और जिहादी आतंकी संगठनों के जरिये जब चाहे कश्मीर को अस्थिर कर सकता है। लिहाजा उससे बात करते रहना आवश्यक है। ऐसा करने पर होता यह था कि द्विपक्षीय वार्ता शुरू करने के कुछ समय बाद ही पाकिस्तान वार्ता की मेज पर दबाव बनाकर लाभ हासिल करने के लिए और बड़े आतंकी हमले कराता था। यह दुष्चक्र दशकों से अनवरत चल रहा था। मोदी सरकार ने उड़ी आतंकी हमले के बाद से इसके ठीक विपरीत नीति अपनाते हुए पाकिस्तान से केवल बातचीत ही बंद नहीं की, बल्कि सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक जैसे कदम उठाने से भी परहेज नहीं किया। इतना ही नहीं भारत ने पाकिस्तान की परमाणु हौव्वे की हेकड़ी भी निकाल दी। पाकिस्तान से वार्ता बंद करने का दूसरा लाभ यह हुआ कि पूरे विश्व में भारत-पाकिस्तान का नाम एक साथ जोड़ने की कूटनीतिक संस्कृति लगभग समाप्त हो चुकी है। अब पाकिस्तान भारत का समकक्ष नहीं रहा। अंतरराष्ट्रीय पटल पर भारत का नाम अब चीन और रूस जैसे शक्तिशाली देशों के साथ लिया जाता है। द्विपक्षीय संबंधों की दृष्टि से भी देखें तो पाकिस्तान को दबाव में बनाए रखने और अधिक भाव न देने की नीति इस अर्थ में भी कारगर रही कि सीमा पर हिंसक घटनाएं कम हुई हैं। वर्ष 2020 में चीन द्वारा पूर्वी लद्दाख में सैन्य मोर्चा खोलने के समय भी पाकिस्तान ने पश्चिमी मोर्चे पर कोई आक्रामक मुद्रा नहीं अपनाई। उलटे इस तनाव के बीच ही फरवरी 2021 में उसने भारत के साथ नियंत्रण रेखा को लेकर संघर्षविराम की घोषणा कर दी, जो अभी तक जारी है। चूंकि पाकिस्तान अब भारत को लेकर अपनी जनता का ध्यान भटकाने में सक्षम नहीं रहा, इसलिए वहां आम जन का ध्यान अब घरेलू मुद्दों की ओर जाने लगा है। आंतरिक मोर्चे पर सशस्त्र अलगाववाद एवं गंभीर असंतोष ने भी पाकिस्तान की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

वक्फ पर फैसले का वक्त, लोकसभा में पेश किए जाने की तैयारी

> वक्फ संशोधन विधेयक को लोकसभा में पेश किए जाने की सरकार की तैयारी पर विपक्षी दलों के अतार्किक रवैये को देखते हुए इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा और कोई उपाय नहीं कि उसने अंधविरोध का रास्ता अपना लिया है। सभी इससे परिचित हैं कि मौजूदा वक्फ कानून के चलते वक्फ बोर्ड केवल मनमाने अधिकारों से ही लैस नहीं हैं, बल्कि उनकी भ्रष्ट कार्यप्रणाली के चलते वक्फ संपत्तियों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग भी हो रहा है और इसी कारण लाखों करोड़ रुपये की उसकी संपत्तियों का कोई लाभ निर्धन मुसलमानों को नहीं मिलता। ऐसे मुस्लिम निर्धन परिवारों के बारे में जानना कठिन है, जिन्हें वक्फ बोर्डों से किसी तरह की कोई सहायता मिली हो। आखिर ऐसे किसी कानून में कोई संशोधन-परिवर्तन क्यों नहीं होना चाहिए, जो अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त

वक्फ विधेयक पर विपक्ष के दुराग्रह भरे रवैये को देखते हुए सरकार के लिए आवश्यक केवल यह नहीं है कि लोकसभा और फिर राज्यसभा में उस पर व्यापक बहस हो। इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि वह वक्फ विधेयक को लेकर हो रहे दुष्प्रचार के खिलाफ भी सक्रिय हो ताकि लोगों को गुमराह कर उन्हें सड़कों पर उतारने वालों के मंसूबों पर पानी फेरा जा सके। वक्फ संशोधन विधेयक को लोकसभा में पेश किए जाने की सरकार की तैयारी पर विपक्षी दलों के अतार्किक रवैये को देखते हुए इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा और कोई उपाय नहीं कि उसने अंधविरोध का रास्ता अपना लिया है। सभी इससे परिचित हैं कि मौजूदा वक्फ कानून के चलते वक्फ बोर्ड केवल मनमाने अधिकारों से ही लैस नहीं हैं, बल्कि उनकी भ्रष्ट कार्यप्रणाली के चलते वक्फ संपत्तियों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग भी हो रहा है और इसी कारण लाखों करोड़ रुपये की उसकी संपत्तियों का कोई लाभ निर्धन मुसलमानों को नहीं मिलता। ऐसे मुस्लिम निर्धन परिवारों के बारे में जानना कठिन है, जिन्हें वक्फ बोर्डों से किसी तरह की कोई सहायता मिली हो। आखिर ऐसे किसी कानून में कोई संशोधन-परिवर्तन क्यों नहीं होना चाहिए, जो अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त करने में नाकाम हो? होना तो यह चाहिए था कि विपक्षी दल ऐसे सुझाव लेकर सामने आते, जिससे वक्फ बोर्डों की कार्यप्रणाली सुधरती, लेकिन उनके नेताओं ने कुल मिलाकर इससे इन्कार ही किया। वक्फ संशोधन विधेयक पर गठित संयुक्त संसदीय समिति में शामिल विपक्षी दलों के सांसदों ने कोई ठोस सुझाव देने के स्थान पर उसमें हंगामा-हल्ला ही अधिक किया। इस समिति का कार्यकाल भी बढ़ाया गया, लेकिन विपक्षी नेता इसी कुतर्क को दोहराते रहे कि वक्फ कानून में किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं। वे इसके बाद भी ऐसा कह रहे थे, जब वक्फ बोर्डों की मनमानी कार्यप्रणाली के अनेक चौंकाने वाले समाचार कर्नाटक, केरल, गुजरात, मध्य प्रदेश आदि राज्यों से आ रहे थे। वक्फ संशोधन विधेयक पर विपक्षी दलों का व्यवहार तुष्टीकरण और वोट बैंक की क्षुद्र राजनीति का ही परिचायक है। इसी राजनीति के चलते वे कुछ मुस्लिम नेताओं के साथ इस दुष्प्रचार को हवा देने में लगे हुए हैं कि वक्फ संशोधन विधेयक का उद्देश्य मस्जिदों, मदरसों आदि की जमीन पर कब्जा करना है।

विपक्षी नेता यह देखने से भी साफ इन्कार कर रहे हैं कि किस तरह अनेक मुस्लिम संगठन वक्फ बोर्डों के कामकाज में सुधार की आवश्यकता जता रहे हैं। विपक्ष की ओर से दिया जा रहा यह तर्क हास्यास्पद ही है कि मौजूदा वक्फ कानून में किसी तरह का संशोधन नहीं हो सकता। आखिर जब इस कानून में पहले भी संशोधन होते रहे हैं, तो देश, काल और परिस्थितियों के हिसाब से उसमें फिर से संशोधन क्यों नहीं हो सकते? वक्फ विधेयक पर विपक्ष के दुराग्रह भरे रवैये को देखते हुए सरकार के लिए आवश्यक केवल यह नहीं है कि लोकसभा और फिर राज्यसभा में उस पर व्यापक बहस हो। इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि वह वक्फ विधेयक को लेकर हो रहे दुष्प्रचार के खिलाफ भी सक्रिय हो, ताकि लोगों को गुमराह कर उन्हें सड़कों पर उतारने वालों के मंसूबों पर पानी फेरा जा सके।

संसदीय समिति के आदेश के बावजूद अधिकारियों ने नहीं दिया अचल संपत्ति का ब्योरा, उनके कार्यशैली पर सवाल उठना स्वाभाविक

> यह तय है कि ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के बिना कहीं भी सुशासन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर कोई अधिकारी आदेश के अनुपालन में लापरवाही बरतता है, तो उसके खिलाफ निस्संदेह कार्रवाई होनी चाहिए। संसद की स्थायी समिति का यह सुझाव उचित है कि संपत्ति का ब्योरा दाखिल करने के लिए एक निगरानी तंत्र स्थापित हो और इसमें एक कार्यबल का गठन किया जाए, जो ब्योरा दाखिल न करने वाले अधिकारियों पर नजर रखे।

ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के बिना कहीं भी सुशासन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर कोई अधिकारी आदेश के अनुपालन में लापरवाही बरतता है, तो उसके खिलाफ निस्संदेह कार्रवाई होनी चाहिए। सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी संपत्ति का ब्योरा देने के लिए बार-बार कहने पर भी सार्थक नतीजे नहीं निकले हैं, तो इसकी वजह क्या हो सकती है, इसे समझा जा सकता है। दरअसल, कोई बड़ी दंडात्मक कार्रवाई न होने से प्रायः अधिकारी अपनी संपत्ति का ब्योरा देने से कतराते हैं। ऐसे में, संसद की एक स्थायी समिति ने निर्धारित समय सीमा में ब्योरा दाखिल न करने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के खिलाफ उचित कार्रवाई का सुझाव देकर स्पष्ट कर दिया है कि उनमें कहीं न कहीं पारदर्शिता की कमी है। हैरत की बात है कि निर्देश के बावजूद वर्ष 2024 में इक्यानबे अधिकारियों ने अपनी संपत्ति का ब्योरा दाखिल किया। जबकि इससे पहले तिहत्तर अधिकारियों ने ही ऐसा किया था। बड़े अधिकारी ब्योरा देने से बच रहे हों, तो जाहिर है कि कहीं न कहीं उनमें ईमानदारी का अभाव है। अगर कोई भ्रष्ट आचरण नहीं किया, तो फिर अपनी

अचल संपत्ति की जानकारी देने से क्यों गुरेज? वे कुछ छिपा रहे हैं, तो कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है। ऐसे में अधिकारियों की कार्यशैली पर सवाल उठना स्वाभाविक है। कोई दो मत नहीं कि ऐसे अधिकारी ही जवाबदेही से बचने का प्रयास करते हैं। जब ऊपरी स्तर पर जवाबदेही नहीं दिखेगी, तो निचले स्तर पर क्या उम्मीद की जा सकती है। यह तय है कि ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के बिना कहीं भी सुशासन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर कोई अधिकारी आदेश के अनुपालन में लापरवाही बरतता है, तो उसके खिलाफ निस्संदेह कार्रवाई होनी चाहिए। संसद की स्थायी समिति का यह सुझाव उचित है कि संपत्ति का ब्योरा दाखिल करने के लिए एक निगरानी तंत्र स्थापित हो और इसमें एक कार्यबल का गठन किया जाए, जो ब्योरा दाखिल न करने वाले अधिकारियों पर नजर रखे। इसके बाद आगे की प्रक्रिया तय होगी। सरकारी तंत्र में जवाबदेही सुनिश्चित होनी ही चाहिए। संसदीय समिति को इसी जवाबदेही की चिंता है। बेहतर होता कि बजाय कार्रवाई के डर से, अधिकारी स्वेच्छा से अपनी संपत्ति की सूचना देते। समिति की सिफारिश के बाद उम्मीद की जा सकती है कि इसके सकारात्मक नतीजे सामने आएं।

बार्सिलोना और रियल मैड्रिड लीजेंड्स के बीच मुंबई में खेले जाने वाले मुकाबले के लिए दोनों टीमों के स्क्वॉड का ऐलान

नई दिल्ली। बार्सिलोना और रियल मैड्रिड लीजेंड्स के बीच मुंबई में 6 अप्रैल को खेले जाने वाले मुकाबले के लिए दोनों टीमों के स्क्वॉड का ऐलान हो गया है। यह पहली बार होगा जब रियल मैड्रिड और बार्सिलोना दोनों के पूर्व खिलाड़ी भारत में एल-क्लासिको मैच में खेलेंगे।

कार्ल्स पुयोल बार्सिलोना लीजेंड्स की कप्तानी करेंगे, जबकि लुइस फिगो को रियल मैड्रिड लीजेंड्स का कप्तान बनाया गया है।

6 अप्रैल को 55,000 दर्शकों की क्षमता वाले डीवाई पाटिल स्टेडियम में दो स्पेनिश क्लब के बीच होने वाला फैंडली मैच भारतीय समयानुसार शाम 7 बजे शुरू होगा।

रियल मैड्रिड लीजेंड्स- लुइस फिगो (कप्तान), पेड्रो कॉन्ट्रेरास, किको कैसिला, फ्रांसिस्को पावोन, फर्नांडो सानज, अगस्टिन गार्सिया, पेड्रो मुनिटिस, रूबेन डे ला रेड, एंटोनियो टोनी डेल मोरल सेगुरा, जॉर्ज जोको ओस्टिज, इवान पेरेज, जीजस एनरिक वेलास्को मुनोज, जोस लुइस कैबरेरा, जुआन जोस ओलाल्ला फर्नांडीज, डेविड बराल टोरेस, क्रिश्चियन करेम्ब्यू, फर्नांडो मोरिएंटेस, पेपे, माइकल ओवेन

बार्सिलोना लीजेंड्स- कार्ल्स पुयोल (कप्तान), जीसस एंजॉय, विटोर बाया, जोफ्रे माटेउ, फर्नांडो नवारो, रॉबर्टो ट्रैशोरस, जेवियर सविओला, फिलिप कोकू, फ्रैंक डी बोअर, जियोवानी सिल्वा, रिवाल्डो, मार्क वैलिएंटे हर्नांडेज, लुडोविक गिउली, रिकार्डो क्वारेस्मा, गैज्का मेंडिएटा, सर्जी बारजुआन, जावी, जोस एडमिलसन गोम्स डी मोरेस, पैट्रिक क्लुइवर्ट।

न्यूजीलैंड ने दूसरा वनडे 84 रन से जीता

पाकिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज जीती, मिचेल ने नाबाद 99 रन बनाए

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड ने दूसरे वनडे में पाकिस्तान को 84 रन से हरा दिया। इसी के साथ कीवी टीम ने तीन मैचों की वनडे सीरीज भी जीत ली। टीम सीरीज में 2-0 से आगे है।

हैमिल्टन में बुधवार को खेले गए मैच में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला किया। न्यूजीलैंड ने 50 ओवर में 8 विकेट पर 292 रन बनाए। 293 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाक टीम 41.2 ओवर में 208 रन पर ऑलआउट हो गई। न्यूजीलैंड के मिचेल हे ने नाबाद 99 रन बनाए। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। सीरीज का तीसरा और आखिरी मुकाबला 5 अप्रैल को माउंट माउंगानुई में खेला जाएगा।

न्यूजीलैंड के लिए 7वें नंबर पर बैटिंग करने उतरे मिचेल हे ने 78 बॉल पर नाबाद 99 रन बनाए। उनके अलावा मुहम्मद अब्बास ने 41, निक केली ने 31 और हेनरी निकोल्स ने 22 रन बनाए। मिचेल ने 4 कैच भी पकड़े। पाकिस्तान के लिए मोहम्मद वसीम और सुफियान मुकीम ने 2-2 विकेट लिए। फहीम अशरफ, अकिफ जावेद और हारिस रऊफ को 1-1 विकेट मिला। सियर्स ने 5 विकेट झटके 293 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाकिस्तान टीम के लिए फहीम अशरफ और नसीम शाह ने अर्धशतक लगाए। फहीम ने 80 बॉल पर 73 और नसीम ने 44 बॉल पर 51 रन की पारी खेली। लेकिन, दोनों खिलाड़ी अपनी टीम को जीत दिलाने में नाकाम रहें। न्यूजीलैंड के लिए बेन सियर्स ने 5 और जैकब डफी ने 3 विकेट झटके। नाथन स्मिथ और विल ओरूर्क को 1-1 विकेट मिला। न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को पहले वनडे में 73 रन से हराया था। 3 मैचों वाली वनडे सीरीज का पहला मुकाबला शनिवार को न्यूजीलैंड के नापियर में खेला गया। इस मैच में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर फिल्डिंग चुनी। कीवी टीम ने 9 विकेट के नुकसान पर 344 रन बनाए थे। 345 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाकिस्तान टीम 44.1 ओवर में 271 रनों पर सिमट गई।

गोवा से डोमेस्टिक क्रिकेट खेलेंगे यशस्वी जायसवाल, मुंबई एसोसिएशन से एनओसी मांगा

नई दिल्ली। भारतीय ओपनर यशस्वी जायसवाल अगले सीजन में गोवा से डोमेस्टिक क्रिकेट खेलते नजर आएंगे। इतना ही नहीं, उन्हें गोवा का कप्तान बनाया जा सकता है।

23 साल के भारतीय ओपनर यशस्वी ने मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन से नो-ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट मांगा है। एमसीए के एक अधिकारी ने बुधवार को बताया- हां, उनका यह फैसला चौकाने वाला है, लेकिन उसने कुछ न कुछ सोचा होगा। उसने खुद को रिलीज करने की मांग की। एमसीए ने जायसवाल की मांग को स्वीकार्य कर लिया है।

जायसवाल ने मुंबई के लिए आखिरी मुकाबला 23 से 25 जनवरी तक रणजी ट्रॉफी में जम्मू एंड कश्मीर के खिलाफ खेला था। उस मुकाबले में जायसवाल ने 4 और 26 रन बनाए थे।

गोवा क्रिकेट संघ के सचिव शांभा देसाई ने कहा- वे हमारे लिए खेलना चाहते हैं और हम उनका स्वागत करते हैं। यशस्वी को कप्तान बनाए जाने के सवाल पर देसाई ने कहा- हां, यह हो सकता है। उन्होंने भारतीय टीम के लिए खेला है। जब वे नेशनल ड्यूटी में नहीं होंगे और घरेलू क्रिकेट के लिए उपलब्ध होंगे। तो उसने कप्तान बनाया जाएगा।

यशस्वी मुंबई छोड़कर गोवा से खेलने वाले तीसरे क्रिकेट हैं। उनसे पहले अर्जुन तेंदुलकर और सिद्धार्थ लाड गोवा की ओर से खेल चुके हैं। तेंदुलकर-लाड 2022-23 के सीजन में गोवा की ओर से उतरे थे। उसके बाद सिद्धार्थ ने मुंबई में वापसी भी की। वे कूलिंग पीरियड में भी रहे।

भारत के लिए 19 मैच खेल चुके हैं जायसवाल यशस्वी जायसवाल ने जुलाई 2023 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट डेब्यू किया था और तभी से वह ओपनर के तौर पर पहली पसंद बने हुए हैं। यशस्वी ने डेब्यू करने के बाद से भारत के लिए 19 मैच खेले हैं और बड़े मंच पर शानदार प्रदर्शन किया है।

पंत की कप्तानी में लखनऊ की दूसरी हार पर मालिक संजीव गोयनका भड़के, फैंस कर रहे सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल

नई दिल्ली। आईपीएल 2025 के 13वें मुकाबले में लखनऊ सुपर जाएंट्स को पंजाब किंग्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। पहले बल्लेबाजी करते हुए लखनऊ ने 7 विकेट के नुकसान पर 171 रन का टारगेट सामने रखा। जिसे पंजाब ने 16.2 ओवर में ही हासिल कर लिया।

यह लखनऊ की इस सीजन में तीन मैचों में दूसरी हार है। अपने पहले मैच में टीम को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। वहीं दूसरी मैच में टीम ने हैदराबाद को हराया था।

लखनऊ सुपर जाएंट्स की हार के बाद टीम के मालिक संजीव गोयनका गुस्से में नजर आए। उन्होंने ग्राउंड पर कप्तान रिषभ पंत को सबके सामने फटकार लगाई। उसके बाद वे ड्रेसिंग रूम में भी पंत से कुछ बात करते नजर आए।

इस सीजन तीन मैचों में पंत का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। पंत 3 पारियों में कुल 17 रन ही बना सके हैं। वे दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ अपने पहले मैच में शून्य पर आउट हो गए थे। वहीं उन्होंने हैदराबाद के खिलाफ 15 और पंजाब के खिलाफ 2 रन बनाए।

रिषभ पंत ढ्ढक्क इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी हैं। उन्हें लखनऊ सुपर जाएंट्स ने नवंबर 2024 के मेगा ऑक्शन में 27 करोड़ रुपए में खरीदा था। इतनी रकम मिलने के बावजूद इस सीजन में उनके निराशाजनक प्रदर्शन से फैंस नाखुश हैं। लोगों ने सोशल मीडिया पर पंत को ट्रोल करना शुरू कर दिया है। मीम्स के जरिए उनका मजाक उड़ाया जा रहा है। कोई उन्हें 27 करोड़ का पहलवान कह रहा है तो कोई उन्हें ड्रॉप करने की बात कह रहा है।

लखनऊ का अगला मैच 4 अप्रैल को लखनऊ अपना अगला मुकाबला 4 अप्रैल को मुंबई इंडियंस के खिलाफ खेलेगी। मैच लखनऊ के भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी क्रिकेट स्टेडियम में शाम 7.30 बजे से शुरू होगा। फिलहाल रुस्त्र 2 पॉइंट्स के साथ पॉइंट टेबल में 9वें स्थान पर है।

व्यापार

टाटा कंज्यूमर का शेयर 7 प्रतिशत चढ़ा, गोल्डमैन ने शेयर की रेटिंग को 'बाय' में अपग्रेड किया

नई दिल्ली। गोल्डमैन सैक्स ने टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स के शेयर की रेटिंग को 'बाय' में अपग्रेड किया है। टारगेट को 1,040 से बढ़ाकर 1,200 कर दिया है। इसके बाद आज इसके शेयर में 7त्न की तेजी रही। ये 1,060 रुपए पर बंद हुआ।

गोल्डमैन सैक्स ने रेटिंग अपग्रेड करने के पीछे वित्त वर्ष 25-27 के दौरान टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स के लिए स्ट्रॉन्ग अर्निंग ग्रोथ पोटेंशियल का हवाला दिया।

टाटा कंज्यूमर का तीसरी तिमाही में मुनाफा 281.92 करोड़ रुपए था

टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड का दिसंबर, 2024 को समाप्त तीसरी तिमाही का शुद्ध मुनाफा 6.5त्न घटकर 281.92 करोड़ रुपए था। कंपनी ने एक साल पहले अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में 301.51 करोड़ रुपए का नेट प्रॉफिट कमाया था।

इस तिमाही के दौरान कंपनी की परिचालन आय 16.81 प्रतिशत बढ़कर 4,443.56 करोड़ रुपए हो गई। एक साल पहले की समान अवधि में यह 3,803.92 करोड़ रुपए थी। वहीं दिसंबर तिमाही में टाटा कंज्यूमर का कुल खर्च 22 प्रतिशत बढ़कर 4,087.07 करोड़ रुपए हो गया।

दिसंबर तिमाही में टाटा कंज्यूमर का कुल ब्रांडेड कारोबार 18.3 प्रतिशत बढ़कर 4,026.15 करोड़ रुपए हो गया।

पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 3,403.31 करोड़ रुपए था। टाटा कंज्यूंर के ब्रांडेड कारोबार में चाय, कॉफी, पानी और अन्य विभिन्न वैल्यू एडेड बिजनेस शामिल हैं।

भारत में ब्रांडेड कारोबार से इसका रेवेन्यू 19.31 प्रतिशत बढ़कर 2,833.68 करोड़ रुपए हो गया। अंतरराष्ट्रीय ब्रांडेड कारोबार 15.95 प्रतिशत बढ़कर 1,192.47 करोड़ रुपए हो गया। जबकि, गैर-ब्रांडेड कारोबार से इसका रेवेन्यू 446.12 करोड़ रुपये रहा, जो 8.66 प्रतिशत की वृद्धि है।

टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड की स्थापना 1962 में हुई थी। यह कंपनी पहले ÷टाटा ग्लोबल बेवरेजेस के नाम से जानी जाती थी। टाटा टी ने भारत में चाय के बाजार में अपनी मजबूत पहचान बनाई और बाद में इसे वैश्विक स्तर पर विस्तारित किया गया।

हेल्थ एप में एआई डॉक्टर का ऑप्शन लाएगी एपल यूजर्स को डाइट और नींद से जुड़ी हेल्थ टिप्स मिलेंगी

नई दिल्ली। टेक कंपनी एपल जल्द ही आईफोन के हेल्थ एप में एआई डॉक्टर का ऑप्शन लाने का प्लान कर रही है। इसके जरिए यूजर्स को एप में 24×7 पर्सनलाइज्ड हेल्थ टिप्स दी जाएंगी। नए अपडेट्स हेल्थ एप को पूरी तरह से चेंज करेंगे। इन टिप्स को एपल वॉच, बड्स और अन्य जगहों से इकट्ठा किए गए पर्सनलाइज्ड डेटा के इनपुट पर बनाया जाएगा। इसे मलबेरी प्रोजेक्ट के अंदर डेवलप किया जा रहा है। अपडेट अभी ट्रेनिंग फेज में है, सितंबर तक इसे रोल आउट किया जा सकता है।

हार्ट रेट, ब्लड प्रेशर जैसे डेटा से कस्टमाइज्ड टिप्स मिलेंगी

एआई डॉक्टर यूजर्स की सेहत का डेटा एनालाइज करके सुझाव देगा। एआई आपके डेली रूटीन, हार्ट रेट, ब्लड प्रेशर जैसे डेटा को एनालाइज करेगा। इसके बाद आपको डेटा के आधार पर डाइट, एक्सरसाइज और नींद से जुड़ी सलाह देगा। एपल के डॉक्टर्स आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को ट्रेनिंग दे रहे हैं। जल्द ही बाहर के डॉक्टर्स भी प्रोजेक्ट से जुड़ेंगे।

नए हेल्थ एप में कंपनी एक होस्ट की तरह दिखने वाला एआई मॉडल प्रोवाइड कर सकती है। ये यूजर्स के हेल्थ से जुड़े सवालों के जवाब देगा। इसके लिए कंपनी एक बड़ी डॉक्टर पर्सनैलिटी की तलाश कर रही है।

कैलिफोर्निया में बनाई नई फैसिलिटी

कंपनी ने इस प्रोजेक्ट के लिए कैलिफोर्निया के ओकलैंड में नया सेंटर खोला है। यहां एप के लिए डॉक्टर्स के वीडियो कंटेंट को बनाया जा रहा है। प्रोजेक्ट में कंपनी का मकसद यूजर्स को ऐसी पर्सनलाइज्ड हेल्थ टिप्स देना है, जैसे कोई असली डॉक्टर सलाह देता हो। प्रोजेक्ट को डॉ. सुंबुल देसाई और जेफ विलियम्स लीड कर रहे हैं।

भारत के विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि मार्च में 8 महीने के उच्चतम स्तर पर, पीएमआई के आंकड़े जारी

नई दिल्ली। भारत के विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर मार्च में बढ़कर आठ महीने के उच्च स्तर पर पहुंच गई है। बाजार में बेहतर मांग के कारण कारखाना ऑर्डर और उत्पादन बढ़ने से वृद्धि दर में इजाफा हुआ है। बुधवार को जारी पीएमआई के मासिक सर्वेक्षण में यह जानकारी दी गई है।

मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया मैन्युफैक्चरिंग परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) मार्च में 58.1 पर पहुंच गया। यह आंकड़ा फरवरी में 56.3 था। फरवरी में, नए ऑर्डरों और उत्पादन में धीमी वृद्धि के बीच भारत का विनिर्माण पीएमआई 14 महीने के निचले स्तर पर आ गया था।

पीएमआई की भाषा में, 50 से ऊपर का अंक विस्तार को दर्शाता है, जबकि 50 से नीचे का अंक संकुचन को दर्शाता है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि ने फरवरी में खोई हुई जमीन वापस हासिल कर ली है।

मार्च में कुल बिक्री में जुलाई 2024 के बाद से सबसे अधिक वृद्धि

सर्वेक्षण के अनुसार, मार्च में कुल बिक्री में जुलाई 2024 के बाद से सबसे अधिक वृद्धि देखी गई। इस दौरान कंपनियों में सकारात्मक ग्राहक रुचि, अनुकूल मांग की स्थिति और सफल मार्केटिंग दिखी।

2024-25 वित्तीय वर्ष के अंत में फर्मों ने उत्पादन की मात्रा बढ़ा दी। इससे विनिर्माण की वृद्धि दर आठ महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। हालांकि मार्च में नए निर्यात ऑर्डर में जोरदार वृद्धि जारी रही, लेकिन वृद्धि की गति तीन महीने के निचले स्तर पर आ गई। पैनलिस्टों ने अंतरराष्ट्रीय बिक्री के मामले में एशिया, यूरोप और मध्य पूर्व में हुई वृद्धि का हवाला दिया।

बीएसएनएल ने जियो से 1,757 करोड़ रुपए नहीं वसूले

कैग ने कहा - टावर जैसे बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करने का पैसा नहीं लिया

नई दिल्ली। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के अनुसार सार्वजनिक बीएसएनएल ने टावर जैसे बुनियादी ढांचे को साझा करने पर अपने समझौते के अनुसार जियो से 10 साल कोई वसूली नहीं की। जिससे सरकार को 1,757.56 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। ये वसूली मई 2014 से नहीं की गई है।

कैग ने बयान में कहा कि बीएसएनएल को 38.36 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ, क्योंकि वह दूरसंचार बुनियादी ढांचा प्रदाताओं को दिए जाने वाले राजस्व हिस्से से लाइसेंस शुल्क का हिस्सा काटने में विफल रही।

29 करोड़ रुपए त्रस्ञ्ज का भी नुकसान कैग ने कहा है कि बीएसएनएल मेसर्स रिलायंस जियो इन्फोकॉम लिमिटेड के साथ मास्टर सर्विस एग्रीमेंट को लागू करने में विफल रही और बीएसएनएल के साझा टावर जैसे बुनियादी ढांचे का अतिरिक्त इस्तेमाल करने के लिए बिल नहीं दिया।

इसके कारण मई 2014 से मार्च 2024 के बीच सरकारी खजाने को 1,757.76 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। कैग ने यह भी पाया कि क्क्रस्हरु ने इंफ्रा शेयरिंग चार्ज का बिल भी कम बनाया। इससे त्रस्ञ्ज समेत 29 करोड़ रुपए के रेवेन्यू का नुकसान हुआ।

जियो के देश में सबसे ज्यादा 46.51 करोड़ यूजर ट्राई की तरफ से दिसंबर महीने का जो डेटा जारी किया गया है उसके मुताबिक देश में जियो के 46.51 करोड़ यूजर हैं। वहीं एयरटेल के 38.53 करोड़, वोडाफोन आइडिया के 20.72 करोड़ और क्क्रस्हरु के 9.17 करोड़ यूजर हैं।

जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का निराकरण समय-सीमा में करें : महापौर

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। महापौर जनसुनवाई मे प्राप्त आवेदनों का निराकरण समयसीमा मे करने हेतु त्वरित गति से कार्य करें उक्त निर्देश महापौर गीता-दुर्गेश अग्रवाल के द्वारा प्रति बुधवार महापौर जनसुनवाई में नागरिकों के द्वारा निगम समस्याओं संबंधि आवेदन पत्रो को प्राप्त करने के दौरान निगम अधिकारियों को दिये गये। जनसुनवाई मे विकास नगर निवासी सतीष यादव के द्वारा सीवरेज के गन्दे पानी की निकासी की समस्या का आवेदन पत्र दिया गया। इस अवसर पर विधायक एवं महापौर प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल, निगम उपायुक्त देवबाला पिपलोनिया, सहायक यंत्री इंदुप्रभा भारती, सौरभ त्रिपाठी, दिनेश चौहान, स्वास्थ्य अधिकारी जितेन्द्र सिसोदिया, कार्यालय अधिक्षक अशोक देशमुख, राजस्व अधिकारी प्रवीण पाठक, उपयंत्री सुर्यप्रकाश तिवारी, पलक श्रीवास्तव, स्वच्छता निरीक्षक हरेन्द्रसिह ठाकुर, मुन्ना कुरैशी, विकास शर्मा, उमेश चतुर्वेदी, विशाल जगताप, प्रहलाद चौहान शेरसिह गोहिल, संजीव पाठक, मुकेश सोलंकी, दिपीका मजूमदार सहित नागरिकगण उपस्थित रहे।

उज्जैन संभाग की प्रथम अग्निवीर साक्षी धाकड़ का किया सम्मान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। नौ दिवसीय शक्ति की आराधना के साथ शुरू हुए हमारे नव संवत्सर को देवास की देवास ग्रीन्स कालोनी निवासी बिटिया शक्ति स्वरूपा साक्षी मोढ़सिंह धाकड़ ने उज्जैन संभाग की प्रथम अग्निवीर बनकर और खास बना दिया। साक्षी ने राष्ट्र सेवार्थ अपने पिताश्री के पदचिन्हों पर चलते हुए भारतीय सेना में अग्निवीर की सेवा को अपने कर्मपुष्प पर अंकित कर राष्ट्र भक्ति का गौरवशाली भाव जगाया है। साक्षी के इस संकल्प से आज संपूर्ण देवास शहर अभिभूत हैं। साक्षी के साहस को प्रणाम करते हुए कालोनीवासियों ने साक्षी का हौसला बढ़ाते हुए पुष्पगुच्छ व शील्ड प्रदान कर स्वागत किया व साक्षी के उज्जलवल भविष्य की कामना करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर कई उच्च पदों से सेवानिवृत्त पुलिस व आर्मी अफसरों ने साक्षी का सम्मान किया। आभार संग्रामसिंह धार्गे ने माना।

नागौरी डीजे पर रहेगी पाबंदी, डीजे संचालकों के साथ बैठक आयोजित

निर्धारित मापदण्डो के अनुरूप साउड बॉक्स का उपयोग कर सकेंगे

श्योपुर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा ने डीजे संचालको की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि जिले में नागौरी डीजे पर पूरी तरह से पाबंदी रहेगी। कही भी नागौरी डीजे पाये गये तो वैधानिक कार्यवाही की जायेगी। डीजे संचालको की आजीविका को दृष्टिगत रखते हुए उन्होने कहा कि साधारण प्रकार के डीजे जिसमें साधारण साउड बॉक्स लगे हो तथा ध्वनि एवं कोलाहल नियंत्रण अधिनियम के तहत निर्धारित मापदण्डो के अनुरूप उपयोग में लाये जा सकेंगे। निर्धारित डेसीबल से ज्यादा तथा अत्यधिक तीव्र ध्वनि के साउड बॉक्स उपयोग में नही लाये जा सकेंगे। निर्धारित मापदण्डो के अनुरूप साधारण प्रकार के डीजे के उपयोग की सूचना संबंधित क्षेत्र के एसडीएम को देनी होगी। वे आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित डीजे संचालको की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष शंशाक भूषण, भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य महावीर सिंह सिसौदिया तथा डीजे संचालक उपस्थित थे।

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा ने कहा कि निर्धारित वॉल्यूम में साउंड बॉक्स का उपयोग किया जा सकता है। लोगों के स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव न पडे इस प्रकार की तेज ध्वनि होने पर सख्त कार्यवाही की जायेगी। उन्होने कहा कि सभी डीजे संचालक साधारण प्रकार के डीजे के संबंध में अपना-अपना रजिस्ट्रेशन एसडीएम के यहां करायेगे तथा जब भी उपयोग होगा तब एसडीएम के यहां सूचना दर्ज कराई जायेगी। उन्होने कहा कि यदि नियमों का उल्लंघन पाया गया तो पूर्ण रूपेण डीजे संचालक ही जिम्मेदार होगे, इसलिए शादी, विवाह एवं अन्य अवसरों पर बुकिंग से पहले अपनी शर्तो से संबंधित पार्टी को अवगत करा दिया जायें। इसके साथ ही रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक सभी प्रकार के ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध रहेगा।

इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष शंशाक भूषण एवं भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य महावीर सिंह सिसौदिया द्वारा भी डीजे संचालको से चर्चा करते हुए समझाइश दी गई कि नियमों के तहत प्रशासन की शर्तो के अनुरूप अपना डीजे से संबंधित अपना व्यवसाय संचालित करें, जिससे आम लोगो को परेशानी न हो और डीजे संचालको के रोजगार पर भी विपरित असर न पडें।

विद्यार्थी समाज में न्यायवान, ज्ञानवान और आदर्श नागरिक के रूप में अपनी पहचान बनाएँ : वर्मा

ढोढर विद्यालय में प्रवेश उत्सव, भविष्य से भेंट थीम पर हुआ आयोजन

श्योपुर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ढोढर में आयोजित प्रवेश उत्सव कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च, अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं, संस्कृत के उक्त श्लोक को उद्घोषित करते हुए बताया कि विद्यार्थियों में उक्त 5 लक्षण होना चाहिए। हर विद्यार्थी जीवन के उद्देश्य निर्धारित कर नियमों का पालन करते हुए सही आचरण करे। समाज में न्यायवान, ज्ञानवान और आदर्श नागरिक के रूप में अपनी पहचान बनाएँ।

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि क्षमता और बुद्धि के मामले में कोई पीछे नहीं होता, सिर्फप्रयास करने की आवश्यकता होती है। दुनिया का ऐसा कोई कार्य नहीं है जो असंभव हो। मनुष्य सिर्फहाड़ मांस का पुतला नहीं, बल्कि ईश्वर का अंश है। मनुष्य में विद्यमान क्षमताएँ असीमित हैं। दृढ़ संकल्प से इनका उपयोग किया जाना चाहिए। परिश्रम से अध्ययन कर बेहतर भविष्य के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को तत्पर होना है। उन्होने कहा कि विद्यालय में संकाय की वृद्धि एवं अतिरिक्त कक्षो के निर्माण के लिए विभागीय स्तर पर प्रस्ताव भेजा जायेगा। इस अवसर पर सहरिया विकास प्राधिकरण अध्यक्ष एवं कैबीनेट मंत्री दर्जा तुरसनपाल बरैया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गुड्डी बाई आदिवासी, भाजपा जिलाध्यक्ष शशांक भूषण, पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अशोक गर्ग, सीईओ जिला पंचायत अतेंद्र सिंह गुर्जर, एसडीएम मनोज गढ़वाल, बीईओ श्रीमती मधु शर्मा, मंडल अध्यक्ष सुमेर सिंह जादौन, सुरेश टेगौर, जयदीप तोमर, सरपंच नारायण गोयल, प्राचार्य रावत सहित शिक्षक, अभिभावक और स्थानीय गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष शंशाक भूषण ने कहा कि आज के विद्यार्थी ही कल का भविष्य है, भविष्य से भेंट कार्यक्रम इसी थीम को आधारित रख आयोजित किया गया है। इस अवसर पर उन्होने विद्यालयों में गणित, विज्ञान, कॉमर्स की फेकल्टी बढाये जाने तथा विद्यालय में अतिरिक्त कक्षो के निर्माण के लिए आश्वस्त किया गया। पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अपना लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढे तथा अपनी रूचि अनुसार विषय का चयन कर कैरियर बनायें। उन्होने विद्यार्थियों से मोबाइल का सकारात्मक उपयोग करने की अपील करते हुए कहा कि मोबाइल का अनावश्यक उपयोग न करें तथा अपना पूरा ध्यान पढाई पर लगाये। कार्यक्रम का संचालन डॉ लखन सिंह राजावत एवं प्राचार्य रावत द्वारा किया गया तथा आभार प्रदर्शन बीईओ श्रीमती मधु शर्मा ने किया।

इसके पूर्व प्रवेश उत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ मॉ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ किया गया, तत्पश्चात् विद्यालय की बालिकाओं द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुती दी गई। प्रवेश उत्सव कार्यक्रम के दौरान कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा सहित उपस्थित अतिथियों, जनप्रतिनिधियों द्वारा बच्चों को तिलक लगाकर एवं माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए पढाई में अपना नाम रोशन करने के लिए शुभकामनाएं दी गई। इसके साथ ही विद्यार्थियों को निशुल्क पाठ्य पुस्तको का वितरण किया गया। इस दौरान विद्यालय की छात्रा खुशबू बानो एवं प्रदीप जाटव सहित अन्य विद्यार्थियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। उल्लेखनीय है कि स्कूल शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार एक अप्रैल से 6 अप्रैल तक विद्यालयो में प्रवेश उत्सव कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है।

निर्माणाधीन अस्पताल एवं नव निर्मित कॉलेज का अवलोकन

श्योपुर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा द्वारा आज ग्राम ढोढर के भ्रमण के दौरान साढे 8 करोड रूपये की लागत से स्टेशन रोड पर निर्माणाधीन सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के भवन निर्माण कार्य का अवलोकन किया गया। इसी प्रकार ढोढर में नव निर्मित कॉलेज का अवलोकन करते हुए प्राचार्य रामपति रावत को अगले सत्र से विधिवत कक्षाएं संचालन करने के निर्देश दिये गये।

इस अवसर पर सहरिया विकास प्राधिकरण अध्यक्ष एवं कैबीनेट मंत्री दर्जा तुरसनपाल बरैया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गुड्डी बाई आदिवासी, भाजपा जिलाध्यक्ष शशांक भूषण, पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अशोक गर्ग, सीईओ जिला पंचायत अतेंद्र सिंह गुर्जर, एसडीएम मनोज गढ़वाल, बीईओ श्रीमती मधु शर्मा, मंडल अध्यक्ष सुमेर सिंह जादौन, सुरेश टेगौर, जयदीप तोमर, सरपंच नारायण गोयल, डॉ लखन सिंह राजावत, भूतपूर्व उप संरपच बरकत खान आदि उपस्थित थे। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा ने निर्माणाधीन अस्पताल के निरीक्षण के दौरान निर्देश दिये कि कार्य को समय सीमा में पूर्ण किया जायें। निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि ने बताया कि अभी 30 प्रतिशत कार्य पूर्ण हुआ है। इसके साथ ही नव निर्मित कॉलेज भवन के अवलोकन के दौरान निर्देश दिये कि कॉलेज में फर्नीचर तथा अन्य संसाधन के लिए कॉलेज नोडल से चर्चा कर व्यवस्थाएं पूर्ण की जायें तथा अगले सत्र से व्यवस्थित रूप में कॉलेज का संचालन सुनिश्चित किया जायें।

सीसी रोड एवं दुकान निर्माण के लिए भूमिपूजन

ढोढर में तिराहे से सब्जी मंडी तक बनेगी सीसी सडक

श्योपुर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा सहित जनप्रतिनिधियों द्वारा आज ग्राम ढोढर में तिराहे से सब्जी मंडी तक सीसी रोड एवं बगदिया तिराहे पर दुकान निर्माण कार्यो के लिए भूमिपूजन किया गया। इस अवसर पर सहरिया विकास प्राधिकरण अध्यक्ष एवं कैबीनेट मंत्री दर्जा तुरसनपाल बरैया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गुड्डी बाई आदिवासी, भाजपा जिलाध्यक्ष शशांक भूषण, पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अशोक गर्ग, सीईओ जिला पंचायत अतेंद्र सिंह गुर्जर, एसडीएम मनोज गढ़वाल, बीईओ श्रीमती मधु शर्मा, मंडल अध्यक्ष सुमेर सिंह जादौन, सुरेश टेगौर, जयदीप तोमर, सरपंच नारायण गोयल आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर तिराहे से सब्जी मंडी तक लगभग 13 लाख रूपये लागत की सीसी रोड एवं बगदिया तिराहे पर 12.89 लाख लागत की दुकानों के निर्माण कार्य के लिए भूमिपूजन संपन्न हुआ।

सीसीटीवी कन्ट्रोलरूम का लोकार्पण

ग्राम पंचायत ढोढर द्वारा ग्राम में विभिन्न स्थानों पर लगाये गये सीसीटीवी कैमरो के लिए बनाये गये कन्ट्रोलरूम का लोकार्पण अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा फीता काटकर किया गया। कन्ट्रोलरूम पंचायत भवन में बनाया गया है, जिसमें सभी सीसीटीवी कैमरो को डिस्प्ले पैनल से जोडा गया है। उल्लेखनीय है कि ग्राम में सुरक्षा की दृष्टि से लगभग 25 सीसीटीवी कैमरे पंचायत द्वारा लगवाये गये है।

बुजुर्ग दंपत्ति को मिला पेंशन योजना का लाभ, बृजेश को मिला आवास

संबल योजना में दो हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र दिये, जिला स्तरीय लोक कल्याण शिविर आयोजित

श्योपुर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा की विशेष पहल पर उनके नेतृत्व में ग्रामीण क्षेत्रो में लगाये जा रहे जिला स्तरीय लोक कल्याण शिविरों के क्रम में आज ग्राम ढोढर में शिविर का आयोजन कर ग्रामीणों की समस्याओं का मौके पर ही निदान किया गया, साथ ही उन्हें शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के तहत लाभान्वित भी किया गया। इस अवसर पर सहरिया विकास प्राधिकरण अध्यक्ष एवं कैबीनेट मंत्री दर्जा तुरसनपाल बरैया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गुड्डी बाई आदिवासी, भाजपा जिलाध्यक्ष शशांक भूषण, पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक गर्ग द्वारा अपने उद्बोधन में शासन की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई तथा जिला प्रशासन की गांव-गांव में शिविर लगाकर लाभ दिये जाने की इस पहल को सकारात्मक बताते हुए कहा कि शासन की मंशानुरूप अंतिम पक्ति के व्यक्ति को लाभ देने का कार्य किया जा रहा है।

इसके पूर्व शिविर में पहुंचे अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों का ग्राम पंचायत की ओर से साफा पहनाकर माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। शिविर का संचालन डॉ लखन सिंह राजावत ने किया तथा आभार प्रदर्शन सरपंच नारायण गोयल द्वारा व्यक्त किया गया। शिविर में 190 आवेदन प्राप्त हुए।

बुजुर्ग दंपत्ति को मिला पेंशन योजना का लाभ, बृजेश को मिला आवास

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा द्वारा शिविर के दौरान बुजुर्ग दंपत्ति श्रीमती छोटी बाई तथा अमरू जाटव निवासी खोजीपुरा को साामजिक न्याय विभाग के माध्यम से मौके पर ही पेंशन स्वीकृत करने की कार्यवाही की गई। अब बुजुर्ग दंपत्ति को इंदिरा गांधी वृद्धावस्था पेंशन योजना के तहत 600-600 रूपये की पेंशन राशि हर माह प्राप्त होगी। इसके साथ ही बृजेश शर्मा निवासी ढोढर को पीएम आवास योजना के तहत आवास स्वीकृत करने की कार्यवाही शिविर के दौरान की गई।

संबल योजना में दो हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र दिये

जिला स्तरीय लोक कल्याण शिविर के दौरान

उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना के तहत दो हितग्राहियों को दो-दो लाख रूपये अनुग्रह राशि के स्वीकृति पत्र प्रदान किये गये। आवेदक हनुमान बैरागी के आवेदन का मौके पर ही निराकरण करते हुए उसकी पत्नि स्व. श्रीमती द्रोपदी बाई की मृत्यु पर दो लाख रूपये की अनुग्रह राशि तथा आवेदक विजयपाल माहौर निवासी ढोढर के आवेदन पर उनके पुत्र स्व. महिपाल की मृत्यु के लिए दो लाख रूपये की अनुग्रह राशि के स्वीकृति पत्र सौपे गये।

बुजुर्ग अमरू को लगाया श्रवण यंत्र, कैलाश आदिवासी को मिली 10 हजार की सहायता

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा द्वारा बुजुर्ग अमरू जाटव निवासी खोजीपुरा को कम सुनने के कारण होने वाली परेशानी के चलते तत्काल ही श्रवण यंत्र प्रदाय किया गया। इसके साथ ही ग्राम नीमदा निवासी कैलाश आदिवासी को आर्थिक परेशानियों के चलते रेडक्रॉस के माध्यम से 10 हजार रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान करने के निर्देश दिये गये। अमरू जाटव ने बताया कि दोनो आंखो के दिखाई नही देने के कारण मजदूरी नही कर पा रहा हूँ, जिससे परिवार के भरण पोषण में परेशानी हो रही है।

लक्ष्मण जी मंदिर पर हैंडपम्प स्वीकृत, नवीन बैंक खोलने का प्रस्ताव भेजने के निर्देश

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा द्वारा भाजपा जिला अध्यक्ष शंशाक भूषण, पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक गर्ग सहित ग्रामीणों द्वारा ध्यान आकृष्ट कराये जाने पर लक्ष्मण जी मंदिर पर हैंडपम्प स्वीकृत करने तथा गिर्राजधरण भगवान मंदिर पर सिंगल फेस मोटर लगाये जाने के निर्देश पीएचई विभाग के ओपी नागर को दिये गये। इसी प्रकार जनप्रतिनिधियों द्वारा अवगत कराये जाने पर ढोढर में नवीन बैंक खोलने का प्रस्ताव भेजने के निर्देश एलडीएम रघुनाथ सॉय को दिये। जनप्रतिनिधियों ने अवगत कराया कि ढोढर कृषि उपज मंडी में व्यापार की अधिकता होने से एक ओर बैंक की आवश्यकता है, वर्तमान में यूको बैंक की शाखा है। कार्य की अधिकता होने से बैंकिग कार्य में परेशानी आ रही है। इसी प्रकार पारम नदी पर बलावनी की ओर नवीन रपटा निर्माण कार्य कराये जाने के निर्देश आरईएस अधिकारियों को दिये गये।

ढोढर-खिरखिरी सडक मार्ग को पूर्ण करने के निर्देश

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा द्वारा जनप्रतिनिधियों द्वारा अवगत कराये जाने पर पीएमजीएसवाय अधिकारियों को सडक निर्माण कार्य पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये। भाजपा जिला अध्यक्ष शंशाक भूषण, पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक गर्ग ने बताया था कि 400 मीटर के लगभग सडक नही होने से पूरी सडका का उपयोग नही हो पा रहा है, इस कारण ग्राम खिरखिरी, बंध, बिलौनी, छोलघटा, कैरघटा के लोगों को परेशानी हो रही है। उक्त 400 मीटर का कच्चा मार्ग वर्षाकाल में सबसे ज्यादा आवागमन को प्रभावित करता है। इस मामले में कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अर्पित वर्मा ने निर्देश दिये कि उपयुक्त समाधान निकालकर सडक कार्य पूर्ण किया जायें। इसी प्रकार मजरा शाला पथ की आदिवासी बस्ती में पीएमजीएसवाय सडक का कार्य संचालित है, उक्त सडक को रेलवे स्टेशन से जोडा जाये।

शादी से इंकार किया तो बंदूक की नोंक पर नाबालिग का अपहरण

सिविल लाइन क्षेत्र के हिंगौनाखुर्द गांव में देर रात हुई घटना, मामला दर्ज

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। दो युवकों के बीच करीब छह साल पहले हुए रिश्ते की बातों से मुकरते हुए वधु पक्ष के लोगों ने शादी करने से इंकार कर दिया तो वर पक्ष के लोग हथियारों से लैस होकर आधी रात को वधु पक्ष के घर आ धमके। घर में मौजूद परिवार के लोगों को बंधक बनाया और फायरिंग करते हुए नाबालिग वधु को अगवा कर ले गए। घटना सिविल लाईन थाना क्षेत्र के अंतर्गत हिंगौनाखुर्द पंचायत के मजरा नगर वालों का पुरा में मंगलवार की रात करीब साढ़े 12 बजे होना बताई गई है।

मिली जानकारी के मुताबिक रामाधार सिंह गुर्जर निवासी नगर वालों का पुरा हिंगौनाखुर्द मंगलवार की रात को घर में सो रहे थे। आधी रात करीब साढ़े 12 बजे लाखन गुर्जर, शिवराज, जापान गुर्जर, भूपेन्द्र उर्फ टाईगर, देवेन्द्र उर्फ नैहने निवासीगण कैमरा थाना सरायछौल सहित 5 बंदूक एवं 2 कट्टों से लैस डेढ़ दर्जन लोग रामाधार गुर्जर के घर में घुस आए। हथियारबंद लोगों ने घर के अंदर सो रहे सभी लोगों को बंदूक की नोंक पर बंधक बना लिया। जिसके बाद उन्होंने रामाधार की पुत्री शिवानी गुर्जर

(14) को उठाया और फायरिंग करते हुए भाग निकले। घटना की सूचना मिलने के बाद सिविल लाईन थाने की पुलिस मौके पर पहुंचीं, लेकिन तब तक हमलावर नाबालिगा शिवानी को अगवा कर भाग चुके थे। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की रिपोर्ट पर आरोपी लाखन गुर्जर, शिवराज, जापान गुर्जर, भूपेन्द्र उर्फ टाईगर, देवेन्द्र उर्फ नैहने निवासीगण कैमरा के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर ली है।

6 साल पहले हुई थी रिश्ते की बात, अब कर रहे थे इंकार

अगवा की गई नाबालिगा शिवानी के परिजन रामवीर सिंह गुर्जर ने बताया कि करीब छह साल पहले रामाधार के पुत्र ने आरोपी पक्ष के देवेन्द्र उर्फ नैहने के साथ शिवानी की शादी करने की बात की थी। उस समय शिवानी की आयु महज 7 वर्ष रही होगी। जब यह बात रामाधार और उसके परिवार के सदस्यों को लगी, तो उन्होंने देवेन्द्र की उम्र ज्यादा होने और लड़का पंसद न आने की बात कहते हुए शादी करने से इंकार कर दिया था। जबकि दूसरी ओर वर पक्ष के लोग छह साल पुराने वादे को लेकर शादी करने का दबाव बना रहे थे।

पत्रकार महेंद्र सखबार के पिता का निधन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। अम्बाह क्षेत्र के वरिष्ठ पत्रकार महेंद्र सखबार के पिता भजनलाल सखबार का बुधवार

दोपहर निधन हो गया। वे 90 वर्ष के थे। वे लंबे समय से बीमार चल रहे थे। इलाज के दौरान उन्होंने अपने पैतृक आवास पर अंतिम सांस ली। ज्ञात रहे कि स्वर्गीय भजन लाल इलाके में गणमान्य व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। उनके निधन की खबर से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। कई गणमान्य नागरिक, राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता और मीडिया से जुड़े लोग शोक जताने उनके निवास पहुंचे। सभी ने परिवार को ढांढस बंधाया। दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। स्थानीय मुक्तिधाम में सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

अम्बाह पुलिस ने किया चोरी का खुलासा तीन लाख का माल मशरूका बरामद

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। पुलिस अधीक्षक समीर सौरभ (भापुसे) द्वारा जिले में घटित चोरी एवं नकबजनी की घटनाओं पर अंकुश लगाने, अज्ञात आरोपियों की पतारसी एवं गिरफ्तारी एवं चोरी गए माल-मशरूका की बरामदगी हेतु सम्पूर्ण जिले में विशेष अभियान संचालित कराया जा रहा है। उक्त अभियान के तारतम्य में अति. पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र पाल सिंह डावर के निर्देशन एवं एसडीओपी अम्बाह रवि सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में थाना अम्बाह पुलिस व्दारा चोरी के 04 प्रकरणों का खुलासा करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीबन 03 लाख रूपये कीमती मशरूका बरामद किया गया।

दिनांक 01.04.2025 को निरीक्षक सतेन्द्र सिंह कुशवाह थाना प्रभारी अम्बाह द्वारा मय हमराह फोर्स द्वारा मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर थाना हाजा के अपराध क्रमांक 646/24, 674/24, 73/25,148/25 धारा 331 (4), 305 बीएनएस में फरार चल रहे अज्ञात आरोपी को डायवर्सन रोड अम्बाह से गिरफ्तार कर आरोपी के कब्जे से चोरी किया गया माल-मशरूका 07 जोड़ी तोड़िया, 01 जोड़ी पायल चांदी की, 01 करधोनी चांदी की, 07 नग चांदी के सिक्के, 20 जोड़ी बिछिया चांदी के, 04 सोने की अंगूठी,

01 जोड़ी सोने के बाल्हा, 06 मलिया सोने के मंगलसूत्र कुल मशरूका कीमती करीबन 3,00,000/- रूपये का बरामद किया गया एवं गिरफ्तारशुदा आरोपी को माननीय न्यायालय के समक्ष में पेश किया गया।

अम्बाह पुलिस ने हत्या के प्रयास संबंधी प्रकरण में फरार चल रहे आरोपी को दबोचा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। फरियादी लालू उर्फ अभय सखवार द्वारा थाना अम्बाह पर रिपोर्ट की गई कि दिनांक 29/03/2025 को ग्राम मिश्र, अम्बाह में विशाल शर्मा एवं उसके साथीगण द्वारा फरियादी के ऊपर फायरिंग की गई थी। फरियादी की उक्त रिपोर्ट पर से थाना अम्बाह में अप.क्र. 154/25 धारा 125, 296, 351(2), 3(5) बी.एन.एस. 3(1) द, 3 (1)ध एससीएसटी एक्ट का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण की विवेचना के दौरान साक्ष्य के आधार पर प्रकरण में धारा 109 बीएनएस का इजाफा किया गया। उक्त घटना की गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए पुलिस अधीक्षक मुरैना समीर सौरभ (भापुसे) द्वारा हत्या के प्रयास

संबंधी उक्त प्रकरण में फरारशुदा आरोपीगण की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु थाना स्तर पर टीम का गठन किया गया एवं थाना प्रभारी अम्बाह को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। उक्त निर्देशों के तारतम्य में अति. पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र पाल सिंह डावर के निर्देशन एवं एसडीओपी अम्बाह रवि सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में निरीक्षक सतेन्द्र सिंह कुशवाह थाना प्रभारी अम्बाह द्वारा थाना स्तर पर गठित टीम के साथ आरोपीगण के यथासंभव निवास स्थानों पर दबिश दी गई एवं मुखबिर मामूर किए गए, जिसके उपरांत आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से घटना में प्रयुक्त पिस्टल जब्त कर आरोपी को माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया।

युवक-युवतियों के लिये नि:शुल्क प्रशिक्षण हेतु आवेदन आरसेटी में आमंत्रित

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। सेन्ट आरसेटी मुरैना में ग्रामीण क्षेत्र एवं मनरेगा जॉब कार्ड धारक के 18 से 45 वर्ष के आयु के युवक, युवतियों के लिये नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रारंभ किये जा रहें है। जिनमें मोबाइल रिपेयरिंग, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, कृत्रिम आभूषण बनाना, मशरूम की खेती, घरेलू अगरबत्ती निर्माण, कागज के लिफाफे एवं फाइल बनाना, कम्प्यूटर अकाउंटिग, मखमली खिलौने, ब्यूटि पार्लर एवं महिला सिलाई प्रशिक्षण के फार्म 02 अप्रैल से भरना प्रारंभ हो चुके है। प्रशिक्षण के लिये मनरेगा जॉब कार्ड, बीपीएल, एसएचजी रजिस्टर की कॉपी, 04 फोटो, आधार कार्ड, बैंक पासबुक और मार्कशीट की फोटोकॉपी लाना अनिवार्य है। इच्छुक उम्मीदवार सेन्ट आरेसटी मुरैना में कार्यालयीन समय में संपर्क कर सकते है।

ग्राम कोतवाल में आज से प्रारंभ होगा माता हरसिद्धि का मेला

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। जिले के सुप्रसिद्ध गांव कोतवाल जो महाभारत कालीन कुन्तलपुर था, जिसमें प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी माँ हरसिद्धि देवी का मेला प्रारंभ हो चुका है 03 अप्रैल से प्रारंभ होकर 10 अप्रैल तक चलेगा। स्थानीय निवासी राघवेंद्र सुल्तान सिंह हर्षाना नाका ने बताया कि मेले में दुर्गा अष्टमी को भागवती जागरण एवं रामनवमी के दिन निशान पूजा जवारा विसर्जन के साथ घुड़दौड़ एवं लोक संगीतकार आयोजन होगा। एक अन्य जानकारी में हर्षाना ने बताया कि मेले में दंगल का आयोजन दशमी को होता है। 07 अप्रैल को समय दोपहर 2:00 से शाम 6:00 बजे तक है, जिसमें क्षेत्र के नामी ग्रामीण व शहरी पहलवान आते हैं। दंगल में 100 से लेकर कई हजारों तक की कुश्ती कराई जाती हैं। मुरैना जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर की दूरी पर ऐतिहासिक व पौराणिक गांव स्थित है। माता हरसिद्धि का मंदिर माना जाता है कि इस मंदिर की स्थापना पांडवों ने की थी। हरसिद्धि माता पांडवों की कुलदेवी हैं। यहां हर साल चैत्र नवरात्र में पारंपरिक दंगल, अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन होते हैं। कुन्तलपुर जो कि आज कोतवाल नाम से जाना जाता है यहां ग्राम कुंती का मायका एवं पांडवों की ननिहाल तथा दानवीर कर्ण की जन्म स्थली है। दर्शकों के लिए माँ हरसिद्धि देवी मंदिर बाबा कालूराम महाराज जी मंदिर, कुंती मंदिर, सूर्य कुंड सहित अनेक प्राचीन मंदिर हैं। माँ हरसिद्धि देवी

के मेले में दर्शन पूजा अर्चना करने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही है। हरसिद्धि माँ का दरबार अनेक रंगों से सजकर तैयार हुआ है। यह ग्राम कुंती का मायका एवं पांडवों की ननिहाल तथा दानवीर कर्ण की जन्मस्थली है। माँ हरसिद्धि के इस मंदिर के लिए प्राचीनकाल से यहां किदवंती चली आ रही है कि महाभारत के युद्ध के दौरान भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि इस युद्ध को जीतने के लिए उज्जैन में स्थित माँ हरसिद्धि का आशीर्वाद अत्यधिक आवश्यक है, इसके लिए पांडवों पुत्रों ने तपस्या कर माँ हरसिद्धि को प्रसन्न किया और महाभारत के युद्ध स्थल पर चढ़ने के लिए वरदान मांगा। इस पर हरसिद्धि ने अर्जुन से कहा कि वह उसके सिर पर सवार होकर चलेंगे, लेकिन जिस भी स्थान पर उन्हें रख दिया जाएगा, वहीं स्थापित हो जाएंगी। अर्जुन माँ हरसिद्धि को लेकर महाभारत युद्ध स्थल के लिए उज्जैन से चल पड़े, लेकिन कुंतलपुर स्थित ननिहाल में आकर माँ हरसिद्धि को मंदिर वाले स्थान पर रख दिया। ननिहाल में सभी से मिलकर वापस चलने के दौरान माँ हरसिद्धि को साथ ले जाने का प्रयास किया। माता के आशीर्वाद के अनुसार एक बार रख दिया जाने वाली वहीं स्थापित हो गई। अर्जुन की अनुनय विनय पर उन्होंने कुंतलपुर से ही महाभारत युद्ध में अपना आशीर्वाद देने का वचन दिया तभी माँ हरसिद्धि कुंतलपुर में विराजमान हुईं।

नपा कर्मियों ने शुलभ कॉम्प्लेक्स तोड़ा

आदेश किसका था,पीआईसी सदस्य ने जवाब मांगा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। नगर पालिका परिषद अंबाह के वार्ड क्र.06 में महाराणा प्रताप पार्क के पास बने शुलभ कॉम्प्लेक्स को बीती रात नगर पालिका कर्मचारियों ने तोड़ दिया। यह कॉम्प्लेक्स तीन साल पहले बनवाया गया था। अब इसे तोड़ने का आदेश किसने दिया, यह साफ नहीं हो पाया है।

नगर पालिका परिषद की प्रेसीडेंट ऑफ काउंसलिंग की सदस्य रीना वर्मा एवं पूर्व पार्षद संतोष वर्मा ने इस पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने मुख्य नगर पालिका अधिकारी को ज्ञापन देकर जवाब मांगा है। उन्होंने पूछा है कि इस कॉम्प्लेक्स के निर्माण में कुल कितनी लागत आई थी। साथ ही निर्माण से जुड़ी फाइल की छायाप्रति भी मांगी है। रीना वर्मा ने यह भी पूछा है कि तोड़ने का आदेश किस अधिकारी ने दिया था और किस आधार पर यह कार्रवाई की गई है उन्होंने दो दिन के भीतर पूरे मामले की जानकारी देने की मांग की है। उनका कहना है कि यह जनता से जुड़ा मामला है, इसलिए पारदर्शिता जरूरी है।

आक्रोशित कांग्रेसियों ने जलाया मुख्यमंत्री का पुतला

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के आह्वान पर जिला कांग्रेस कमेटी मुरैना के निर्देशानुसार पुरानी कलेक्ट्रेट पर, मुरैना जिले के परिवहन विभाग में पदस्थ सौरभ शर्मा के खिलाफ लोकायुक्त की छापेमारी के चलते एक इनोवा कार में 11 करोड़ रुपये का कालाधन और 52 किलो सोना बरामद हुआ और अन्य कई अवैध संपत्तियां बरामद हुईं। यह मध्य प्रदेश का अब तक का परिवहन विभाग का भारी भ्रष्टाचार है। सौरभ शर्मा की संपत्ति के स्त्रोतों को लेकर कई सवाल खड़े हुए। सूत्रों से यह भी खुलासा हुआ कि सौरभ शर्मा का भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं से संबंध था। सौरभ शर्मा के उच्च स्तर पर भाजपा सरकार के वरिष्ठ नेताओं से संबंध होने के कारण न्यायालय द्वारा सौरभ शर्मा को रिहा कर दिया गया है, जिसके विरोध में पश्चिम ब्लॉक अध्यक्ष रिंकू पचौरी के नेतृत्व में पुरानी कलेक्ट्रेट पर समस्त

आक्रोशित कांग्रेसियों द्वारा मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री मुर्दाबाद, भाजपा सरकार मुर्दाबाद के नारेबाजी करते हुए मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पुतला दहन किया गया।

उक्त पुतला दहन में जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष मधुराज तोमर, शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष दीपक शर्मा, पूर्व लोकसभा प्रत्याशी सत्यपाल सिंह सिकरवार, मुरैना सभापति राधारमण डंडोतिया, निगम नेताप्रतिपक्ष विनीत कंसाना, किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष जितेंद्र सिंह डंगस, राजेन्द्र यादव, रामलखन डंडोतिया, महिला कांग्रेस की शहर अध्यक्ष नजमा बेगम, गजेंद्र सिंधी, राजेश राठौर, अशोक तोमर, गौरव चतुर्वेदी, नरोत्तम माहौर, हरीराम गुर्जर, धर्मेन्द्र गुर्जर, विनोद जोनवार, प्रदीप रजक, रहीश खान, मनीष शर्मा, रामू टुंडेलकर, रमेश अर्गल, सोनू जोनवार, राकेश गर्ग, बलवीर दौनेरिया, कद्दू खान, अनिल गुर्जर, अवनीश कटारे, सरफुद्दीन खान, रघुवीर शर्मा, बंगाली जाटव, भैरो बघेल, आशा बेपुरिया, खलील उस्मानी, हिमांशु गुर्जर एवं सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

नपा अध्यक्ष ने की कार्रवाई पीआईसी मेंबर रीना वर्मा को हटाया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। नगर पालिका परिषद अम्बाह की अध्यक्ष अंजली जिनेश जैन ने वार्ड क्रमांक 15 की पार्षद रीना पवन वर्मा को प्रेसीडेंट इन काउंसिल की सदस्यता से हटा दिया है। यह कार्रवाई नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 70 (3) के तहत की गई है। फिलहाल उनकी जगह किसी अन्य को सदस्य नहीं बनाया गया है। यह नियुक्ति बाद में की जाएगी।

नपा अध्यक्ष ने बताया कि रीना वर्मा द्वारा पार्टी विरोधी गतिविधियां की जा रही थीं। वह भारतीय जनता पार्टी के बोर्ड के खिलाफ जाकर काम कर रही थीं। इसी कारण यह निर्णय लिया गया है अध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि पीआईसी में सदस्य बनाना या हटाना उनके अधिकार क्षेत्र में आता है।

ज्ञात रहे कि रीना वर्मा पूर्व पार्षद संतोष वर्मा की अनुज वधु हैं। वह वार्ड क्रमांक 15 से चुनाव जीतकर पार्षद बनी थीं। वर्तमान में पीआईसी में प्रिया मोनू तोमर, मीना अवदेश राठौर, सरोज सत्यवीर कपाशिया, बृजेश अशोक कपाशिया, विक्रम तोमर और मंजू प्रमोद सखबार सदस्य हैं।

रोटरी कैम्प में अंतिम दिन 1728 लोगों के हुये पंजीयन

मुरैना। रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 के तहत अंतिम दिन 02 अप्रैल बुधवार को पुलिस परेड ग्राउंड मुरैना में 1 हजार 728 लोगों ने पंजीयन कराये। डॉक्टरों ने मरीजों के परीक्षण किये एवं समुचित इलाज दिया। रोटरी के पदाधिकारी डॉ. संजीव बांदिल ने बताया कि 53 जनरल ओपीडी, 898 मेडीसन, 144 ऑर्थोपैडिक्स, 64 ईएनटी, 29 गायनकलॉजी, 22 सर्जरी, 220 ऑपथामॉलोजी, 108 डेंटल, 10 यूरोलॉजी, 06, सायकायट्री, 02 ऑनकोलॉजी, 75 डरमैटलॉजी, 61 पुलमोनरी, 1 कार्डियोलॉजी और 35 एनसीडी क्लीनिक लोगों ने पंजीयन कराये।

मुरैना के वैश्य परिवार को राजस्थान के बदमाश दे रहे धमकियां

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। सिटी कोतवाली क्षेत्र के वनखंडी रोड पर रहने वाले एक वैश्य परिवार को राजस्थान के बदमाश घर से निकालने, पकड़कर ले जाने की धमकियां दे रहे हैं। पीड़ित ने इसी शिकायत सिटी कोतवाली व पुलिस अधीक्षक को आवेदन देकर की है। शहर की वनखंडी रोड पर रहने वाले विनोद गोयल ने बताया कि राजस्थान में रहने वाले उनके एक रिश्तेदार ने वहीं रहने वाले कुछ लोगों से कर्ज ले लिया और फरार हो गए। जबकि हमारा अपने रिश्तेदार से कोई लेना-देना और मेल-

मुलाकात तक नहीं है। लेकिन आरोपी सुधीर सिंघल निवासी सेपऊ जिला धौलपुर, विनोद जिंदल निवासी नैनागढ़ रोड एवं प्रशांत विंदल निवासी आगरा, शैलू गुर्जर निवासी हिंडौन आए दिन मोबाइल फोन पर मुझे धमकियां दे रहे हैं कि तुम्हारे रिश्तेदार ने जो पैसे लिए हैं, उन्हें तुम चुकाओ। इतना ही नहीं कुछ रोज पहले आरोपीगण उनके घर पर आए और उन्हें धमकी भी दे गए। पीड़ित ने बताया कि आरोपियों की धमकी मेरा पूरा परिवार डरा हुआ है। मेरे बेटे को नौकरी से भी निकाल दिया गया, जिससे हमारा परिवार भूखों मरने की कगार पर पहुंच गया है। पीड़ित ने पुलिस से न्याय की मांग की है।

श्रेष्ठ शाखा बना मुरैना की जैन मिलन महिला संगठन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भारतीय जैन मिलन क्षेत्र क्रमांक 2 का 38वां अधिवेशन सोनागिर के जैन तीर्थ में हुआ। अधिवेशन में मुरैना की जैन मिलन महिला शाखा को श्रेष्ठ शाखा अवार्ड मिला। यह सम्मान सेवा कार्यों और सामाजिक धार्मिक आयोजनों के लिए दिया गया। अधिवेशन में क्षेत्र की 125 शाखाओं ने भाग लिया। सभी शाखाओं को उनके कार्यों के आधार पर उत्तम, अति उत्तम, श्रेष्ठ और सर्वश्रेष्ठ अवार्ड से सम्मानित किया गया।

मुरैना शाखा की अध्यक्ष सपना जैन और उनकी टीम को हरियाली तीज, शाखा शुक्ल जमा, स्वास्थ्य शिविर, वृक्षारोपण, स्क्रैपबुक और लकी ड्रा के लिए भी अवार्ड मिले। चम्बल संभाग

की क्षेत्रीय संयोजिका वीरांगना सरिता जैन के प्रभार की जौरा, मुरैना और पोरसा शाखाओं को सर्वश्रेष्ठ अवार्ड मिला। अधिवेशन की समन्वयक अति वीरांगना शीला जैन टोंग्या रहीं। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, क्षेत्रीय अध्यक्ष वीरांगना अनीता जैन, क्षेत्रीय मंत्री अतिवीर महेंद्र जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय जैन, मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री राकेश शुक्ला, विशिष्ट संरक्षक सुरेश जैन (रितुराज), अति विशिष्ट अतिथि अजय जैन सहारनपुर, महेंद्र जैन एडवोकेट, प्रवीण जैन गंगवाल, बालचंद जैन, ऋषभ जैन, देवेंद्र जैन खतौरा, आशीष जैन अग्रवाल, इंजी. राजेंद्र जैन, अजय जैन, पत्रकार मुकेश जैन, राजेश जैन बंटी, राजीव जैन एडवोकेट, निर्मल पाटनी उपस्थित रहे। मुरैना शाखा से अध्यक्ष सपना जैन, मंत्री कल्पना जैन, चेयरपर्सन बबिता जैन, कार्यकारी सदस्य प्रीति जैन और सविता जैन।

पूर्ण श्रद्धाभाव के साथ मनाई गई निषादराज जयंती

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। दिमनी विधानसभा क्षेत्र के मनफूल के पुरा में स्थित निषादराज महाराज के भव्य मंदिर में ग्राम हनुमानपुरा माता का पुरा, झिरना का पुरा, भैरव का पुरा सहित आसपास के गांव से एकत्रित मांझी निषाद समुदाय हजारों की संख्या में एकत्रित होकर निषाद राज जयंती का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रमोद कुमार मांझी राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय मांझी सभा संगठन, विशिष्ट अतिथि के रूप में भोलाराम बाथम छोंदा, रिंकू बाथम धनेला, विद्याराम बाथम ग्राम छोंदा, दिनेश बाथम ग्वालियर, कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत निषाद द्वारा की गई। सर्वप्रथम भगवान रामजी को व महाराज निषादराज को पुष्पहार अर्पित कर समाज के लिए मंगल कामना की।

समाजजनों के बीच उपस्थित रामावतार सिंह द्वारा बताया गया कि विपत्ति के समय भगवान राम के साथ निषाद जी ने साथ निभाया था। निषाद वंश के केवट जी ने भगवान को गंगा पार कराया था और यह कामना की थी कि भगवान भी हमें भगवान सागर से पार लगाएंगे। कार्यक्रम का आभार व्यक्त तहसीलदार द्वारा किया गया। कार्यक्रम पश्चात प्रसादी का वितरण किया गया। इस अवसर पर ओमवीर सिंह, रामबिहारी, रामसेवक, लाखाराम, राजमान, रामप्रकाश, रामभरोसी गंभीर सहित हजारों की संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

रेत से भरे ट्रेक्टर-ट्रॉली ने बाइक को टक्कर मारी, युवती की मौत

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। रेत से भरे ट्रेक्टर-ट्रॉली ने बाइक पर सवार होकर जा रहे तीन लोगों को टक्कर मार दी। हादसे में एक युवती की मौत हो गई। जबकि दो अन्य जख्मी हुए है। हादसा जौरा थाना क्षेत्र में नरेला रोड पर बुधवार की दोपहर होना बताया जा रहा है। मिली जानकारी के मुताबिक कस्बा जौरा की आवास कॉलोनी में रहने वाली युवती प्रगति शर्मा 21 पुत्री सुनील शर्मा बुधवार को अपनी सहेली रंजना के घर उससे मिलने पहुंचीं थी। वहां से प्रगति अपने घर लौट रही थी। रंजना और

उसका भाई लवकुश बाइक से प्रगति को छोड़ने जा रहे थे। इसी दौरान जब उनकी बाइक नरेला रोड पर धोबिन का पुरा के पास से गुजर रही थी। तभी सामने से आ रहे रेत से भरे ट्रेक्टर-ट्रॉली ने बाइक को टक्कर मार दी। जिससे वे तीनों जख्मी हो गए। उन्हें जौरा अस्पताल पहुंचाया गया। जहां से गंभीर हालत के चलते प्रगति को जिला अस्पताल रैफर कर दिया गया। यहां चिकित्सकों ने परीक्षण करने के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। खबर लिखे जाने तक पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

सबलगढ़ में 2 दुकानों के ताले तोड़कर डेढ़ लाख का माल चोरी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/सबलगढ़। कस्बे के सुनहरा मंडी में दो दुकानों के शटर तोड़कर डेढ़ लाख का माल ले गए। घटना बीते रोज की है। चोरों ने 8 दिन के अंदर इसी इलाके को निशाना बनाया है। जानकारी के अनुसार कस्बे के सुनहरा कृषि उपज मंडी में भैरों पुत्र सत्यप्रकाश गर्ग निवासी पंजाबी बाग की दुकान का शटर तोड़कर एक लाख रुपए कीमती बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, पान मसाला आदि समेट ले गए। वहीं अज्ञात चोरों ने बगल में स्थित राकेश रावत की दुकान का शटर तोड़कर एचपी कंपनी का एक लैपटॉप, 5 हजार रुपए नगद, फिंगर डिवाइस मशीन, कलर प्रिंटर कुल कीमत

50 हजार रुपए का सामान चोरी कर लिया। चोरी की सूचना पर पुलिस ने अज्ञात चोरों के विरुद्ध केस दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है।

केंटर वाहन की टक्कर से युवक की मौत

मुरैना। सिविल लाईन थाना क्षेत्र में 1 अप्रैल को एनएच-44 हाईवे पर पलाश ढाबा के सामने केंटर वाहन क्रं. एमपी06-जीए-1476 के चालक ने इंसाफ खान 28 पुत्र दरफ खान नि. छैरा बागचीनी को टक्कर मार दी। जख्मी हालत में उसे जिला अस्पताल ले जाया गया। जहां परीक्षण के बाद चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने केंटर वाहन के चालक के विरुद्ध धारा-106 के तहत अपराध पंजीबद्ध कर लिया है।

CHANGE OF NAME

I, FERAN SINGH S/o Gangaram R/o Gram- Shyampur, Goth, Morena, Ambah, Madhya Pradesh-476111 have changed the name of my minor daughter **LAXMI** aged 12 years and she shall be hereafter known as **BRAJLATA**, for all future purposes.

I, KAMLESH PRASAD GUPTA S/o Gokul Prasad Gupta R/o Gali No. 4, Ward No. 2, Umari, Raghurajnagar, Satna, Madhya Pradesh-485001 declare that name of mine and my father wrongly written as **Lallu Khairwar** and **Magru Khairwar** in my Aadhaar Card No. 7985 3884 9721. The actual name of mine and my father are **Kamlesh Prasad Gupta** and **Gokul Prasad Gupta** respectively.

I, RAKESH KUMAR S/o Hanuman Prasad R/o Near Beo Offis, Gram Post Jawa, Tehsil Jawa, Jawa, Rewa Madhya Pradesh-486223 declare that name of mine and my father have been wrongly written as **Rakesh Sweepar** and **Hanuman Sweepar** in my 10th class Educational Document and as **Rakesh Kumar Sweepar** and **Hanuman Prasad Sweepar** in my 12th class Educational Document. The actual name of mine and my father are **Rakesh Kumar** and **Hanuman Prasad** respectively.

मुख्यमंत्री ने कहा- श्रमिक परिवारों की मुश्किल घड़ी में सरकार उनके साथ खड़ी है

मृतकों की पार्थिव देह जल्द ही उनके घर पहुंचायी जाएंगी

गुजरात के बनासकांठा पटाखा फैक्ट्री हादसे में मृतकों के परिजन को दी जायेगी आर्थिक सहायता

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुजरात के बनासकांठा स्थित पटाखा फैक्ट्री दुर्घटना अत्यंत दुःखद और कष्टदायी है। राज्य सरकार पूरी सक्रियता एवं तत्परता के साथ मुश्किल घड़ी में पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। पीड़ितों की सहायता के लिए राज्य सरकार की ओर से अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह चौहान सहित पुलिस और प्रशासन के अधिकारी भी दुर्घटनास्थल पर पहुंचे हैं। मृतकों की पार्थिव

देह उनके गृहग्राम एवं परिजन तक पहुंचाने की सभी जरूरी व्यवस्थाएं तेजी से की जा रही हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मीडिया को जारी संदेश में सभी मृतकों के परिजन के प्रति अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष से हादसे का शिकार हुए सभी मृतकों के परिजन को 2-2 लाख रुपए तथा घायल श्रमिकों को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता राशि दी जायेगी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने काम के सिलसिले में राज्य की सीमा से बाहर जाने वाले सभी श्रमिकों से अपने काम के दौरान पूरी सतर्कता बरतने एवं खुद की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखने की अपील भी की है।

10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षाओं का मूल्यांकन कार्य जारी

तीसरे चरण की हुई शुरुआत,

लगभग 1 लाख कॉपी चेक होने के लिए शेष

ग्वालियर। बोर्ड परीक्षाओं का मूल्यांकन अभी भी जारी है और आगामी 15 से 20 दिन तक मूल्यांकन कार्य पूरे होने की संभावना है । क्योंकि ग्वालियर जिला मूल्यांकन समन्वय केंद्र में अभी भी लगभग 1 लाख कॉपी चेक होने के लिए शेष हैं। वहीं चौथे चरण के तहत कुछ और कॉपियां मूल्यांकन के लिए उपलब्ध होंगी । तब कहीं 20 अप्रैल तक मूल्यांकन कार्य पूरा हो सकेगा । फिलहाल बुधवार से तीसरे चरण का मूल्यांकन भी शुरू हो गया है।

ग्वालियर शिंदे छावनी कन्या विद्यालय प्राचार्य एवं जिला मूल्यांकन अधिकारी श्रीमती नवोदिता गुप्ता ने बताया कि कक्षा

फाइल फोटो

दसवीं की प्रथम चरण के तहत प्राप्त हुए कॉपियों का मूल्यांकन पूरा हो गया है जबकि दूसरे चरण के तहत कुछ कॉपी अभी भी चेक होने के लिए शेष हैं। तो वहीं बुधवार से तीसरे चरण का मूल्यांकन शुरू किया गया है। जिसमें कक्षा दसवीं की सामाजिक विज्ञान और गणित विषय की कॉपियां उपलब्ध है । इसी तरह कक्षा 12वीं में संस्कृत इतिहास रसायन शास्त्र और व्यावसायिक अध्ययन की कॉपियां हैं। यहां बता दें कि बीते माह से बोर्ड परीक्षाओं का मूल्यांकन कार्य शुरू हो गया था। जिसमें प्रथम चरण के तहत हिंदी और अंग्रेजी की कॉपियां उपलब्ध हुई थी। इसके बाद द्वितीय चरण शुरू हुआ। जिसमें 70 फीसदी कॉपी चेक हो चुकी है।फिर भी कक्षा दसवीं की अंग्रेजी और कक्षा 12वीं की फिजिक्स ,इकोनॉमिक्स, बायोलॉजी की कॉपी चेक होने के लिए अभी रखी हैं । इसके साथ ही तीसरे चरण में कक्षा दसवीं के सामाजिक विज्ञान की विज्ञान की 32400 कॉपी ,गणित की 27 हजार और कक्षा 12वीं के संस्कृत की 1800 इतिहास की 4860 एवं रसायन शास्त्र की 9000 तथा व्यावसायिक अध्ययन की 2520कॉपी चेक होने के लिए हैं। प्राचार्य श्रीमती गुप्ता ने बताया कि जबकि उक्त मूल्यांकन कार्य के लिए 200 मूल्यांकन करने वाले विषय विशेषज्ञ लगा दिए हैं।

इस तरह कक्षा दसवीं की 64हजार कॉपी चेक हो चुकी है तो वही 67860 कॉपी शेष हैं और 279 मूल्यांकन करता लगे हुए हैं ।इसी तरह कक्षा 12वीं में 63360 कॉपी चेक हो चुकी है और अभी 33840 शेष हैं। और हर रोज 199 वैल्यूअर मूल्यांकन में जुटे हैं।

प्रतिभा पहचानें,मंदबुद्धि नहीं होते ऑटिज्म बच्चे: डॉ. विनीत चतुर्वेदी

ग्वालियर एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स ने वर्ल्ड ऑटिज्म डे पर किया जागरूक

ग्वालियर। ग्वालियर एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स द्वारा वर्ल्ड ऑटिज्म डे पर जैन सेंट्रल स्कूल में बच्चों, उनके पालकों और शिक्षकों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम में डॉ.करुणेश पिपरिया ने ऑटिज्म के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह समस्या बच्चों में बहुत तेजी से बढ़ रही है। जहां वर्ष 2000 तक 700 बच्चे प्रति एक लाख पर ऑटिज्म केसेस थे, वहीं वर्ष 2024 के अनुसार प्रति 36 बच्चों में 1 बच्चे को ऑटिज्म हो रही है। लिहाजा डब्ल्यूएचओ की इस वर्ष की थीम है डिफरेंट नॉट लैस यानी ये बच्चे

अलग जरूर है, परन्तु कम नहीं है। डॉ.विनीत चतुर्वेदी ने बताया कि पालकों को अपने ऐसे बच्चे जो कि ज्यादा घुल मिल नहीं रहे हैं या लगता है कि वो समय से बोलना शुरू नहीं कर पाए हैं, उन्हें तुरंत डॉक्टर को दिखाना चाहिए। उन्होंने बताया कि माता पिता के बाद बच्चा अपने शिक्षकों के संपर्क में आता है। यदि किसी शिक्षक को कोई ऐसा बच्चा दिखता है, जो अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेल नहीं रहा है, उससे बात करने पर आपसे बात नहीं कर रहा है या फिर किसी एक ही एक्टिविटी को बार बार दोहरा रहा है, बहुत समझने पर भी कोई बात अन्य बच्चों की तुलना में देर में समझता है, तो इस तरह का बच्चा ऑटिज्म हो सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि वह ऐसे बच्चों के साथ बहुत सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करें, साथ ही उनके माता पिता को बताएं कि वह अपने बच्चे को डॉक्टर को दिखाएं। डॉ. चतुर्वेदी ने बताया कि ध्यान रखें कि ये बच्चे मंदबुद्धि नहीं होते। बस आवश्यकता है कि उनकी प्रतिभा को पहचान कर उसको दिशा दी जाए। इस मौके डॉ. अजीत कतरोलिया, डॉ.डी.एस.दोनेरिया सहित स्कूल की प्रिंसिपल, कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे।

डॉ. सहस्त्रबुद्धे ने कहा- लक्ष्य हासिल करने के लिये संयम, समन्वय व अनुशासन जरूरी

ग्वालियर। सफल जीवन में लक्ष्य निर्धारण का विशेष महत्व है। लक्ष्य हासिल करने के लिये संयम, समन्वय व अनुशासन जरूरी है। यह बात राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय की कुलगुरू डॉ. स्मिता सहस्त्रबुद्धे ने कम्पू स्थित सांदीपनि विद्यालय (शासकीय पद्माराजा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय) की छात्राओं से संवाद के दौरान कही। डॉ. सहस्त्र बुद्धे स्कूल चलें हम अभियान के तहत बुधवार 2 अप्रैल को भविष्य से भेंट कार्यक्रम में छात्राओं को प्रोत्साहित कर रही थीं। इस अवसर पर उन्होंने पूर्व पार्षद डॉ. करुणा सक्सेना के साथ विद्यालय की बालिकाओं को भविष्य की संभावनाओं के लिये प्रेरित किया।

स्कूल चलें हम अभियान के दूसरे दिन 2 अप्रैल को ग्वालियर जिले के सरकारी स्कूलों में ÷भविष्य से भेंट'' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध, प्रबुद्ध और सम्मानित गणमान्य नागरिक प्रेरक के रूप में स्कूलों में पहुँचकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल करने वाले साहित्यकार, कलाकार, मीडिया व संचार मित्र एवं विभिन्न विभागों के अधिकारी स्कूली बच्चों को प्रोत्साहित करने पहुँचे। इसी तरह रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव नवल शुक्ला व क्षेत्रीय पार्षद श्री अनिल सांखला ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कन्या गजराराजा स्कूल में छात्राओं का मार्गदर्शन किया। इंडियन मेडीकल एसोसिएशन की सचिव डॉ. स्नेहलता दुबे ने शासकीय उत्कृष्ट उमावि क्र.-1 में विद्यार्थियों को प्रेरक व ज्ञानवर्धक प्रसंग बताए। साथ ही चिकित्सक बनने के गुर भी समझाए। डॉ. अरविंद मित्तल ने शासकीय उमावि क्र.-2 के बच्चों को मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिये पौष्टिक भोजन व समय प्रबंधन की बारीकियां समझाईं। भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत उपसंचालक जनसंपर्क मधु सोलापुरकर ने सांदीपनि विद्यालय हजीरा (सीएम राईज शासकीय उमावि पटेल) में पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर बनाने से संबंधित रोचक जानकारी दी। साथ ही विभिन्न प्रकार के दृष्टांत देकर बच्चों को जीवन में सफलता के लिये प्रेरित किया। इसके अलावा सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी श्रीमती गायत्री गुर्जर व सुश्री स्नेहलता चंदेल शासकीय कन्या उमावि एमएलबी मुरार में बच्चों का उत्साहवर्धन करने पहुँचीं। ललित कला संकाय की शिक्षिका श्रीमती निहारिका सिंघल व ओपी माहौर सांदीपनि विद्यालय किलागेट (शासकीय सीएम राइज कन्या उमावि किलागेट रोड) में भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत पहुँचीं और विद्यार्थियों को सफल जीवन के गुर बताए।

निगमायुक्त के निर्देश: निगम की जो भूमि रिक्त हैं उनको लेकर प्लानिंग की जाये

ग्वालियर। शहर के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित निगम मार्केट की रिक्त दुकानों को लेकर उनके आवंटन एवं अन्य उपयोग को लेकर आवश्यक नियमानुसार कार्यवाही करें तथा शहर में निगम की अन्य जो भूमि रिक्त हैं उनको लेकर प्लानिंग करें कि उनका क्या उपयोग किया जाए। यह निर्देश निगम आयुक्त संघ प्रिय ने बुधवार को राजस्व विभाग की समीक्षा करते हुए दिए।

निगमायुक्त संघ प्रिय ने सर्वप्रथम निगम के राजस्व वसूली की जानकारी ली तथा स्पष्ट निर्देश दिए कि अलग अलग मद में हुई राजस्व वसूली की प्रतिशत के आधार पर जानकारी आगामी बैठक में उपलब्ध करायें। इसके पश्चात शहर के खुर्जे वाला मोहल्ला मार्केट, हुजरात मार्केट, ढोली बुआ का पुल, गजराराजा

मार्केट, आवा महाराज की गली में स्थित मार्केट, सागरताल मछ्ल मंडी में स्थित मार्केट, नौगजा रोड इत्यादि सहित विभिन्न मार्केटों में रिक्त निगम की दुकानों की जानकारी ली तथा दुकानों से आने वाले राजस्व एवं रिक्त दुकानों पर चर्चा करते हुए कहा कि जिस मार्केट में जो भी दुकानें रिक्त है, उन्हें कैसे आवंटित किया जाए अथवा उनकी लीज की जाए इसको लेकर प्लानिंग करें तथा नियमानुसार अन्य उपयोग हेतु भी कार्यवाही प्रारंभ करें।

बैठक में लीज के प्रकरणों की जानकारी के साथ ही पार्किंग की व्यवस्थाओं को लेकर भी चर्चा की गई जिसमें यह निर्देश दिए गये कि शहर में जितनी पार्किंग विभागीय स्तर पर चलाई जा रही हैं, उनका भौतिक परीक्षण कर संबंधित उपायुक्त उनकी स्थिति को लेकर रिपोर्ट प्रस्तुत करें। इसके साथ ही जिन पार्किंग स्थलों के टेंडर हो रहे हैं अथवा अन्य स्थानों पर चल रही पार्किंग का निरीक्षण करें तथा आगामी बैठक में जानकारी प्रस्तुत करें। वहीं ट्रेड लाइसेंस को लेकर चर्चा करते हुए ट्रेड लाइसेंस की जानकारी ली तथा पिछले ट्रेड लाइसेंस के रिन्यूअल के लिए सभी संबंधितों को मैसेज इत्यादि कराने के निर्देश दिए। बैठक में अपर आयुक्त विजय राज, उपायुक्त सुनील चौहान, नोडल अधिकारी राजस्व अनूप लिटोरिया उपस्थित थे।

"भविष्य से भेंट" कार्यक्रम के तहत कलेक्टर उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय क्र.1 में पहुंचे

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत शिक्षा विभाग से प्रत्येक अधिकारी को एक स्कूल में 1 घण्टे की क्लास लेने के आदेश जारी किये गये थे। इस कार्यक्रम के तहत कलेक्टर अंकित अस्थाना भी शासकीय उत्कृष्ट उमा विद्यालय क्र. 1 मुरैना में पहुंच कर बच्चों को पाठ पढ़ाया। भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत इसी प्रकार अन्य अधिकारी भी स्कूलों में पहुंचे और उन्होंने बच्चों को शिक्षा के अलावा अन्य आवश्यक व्यवहारिक ज्ञान से भी अवगत कराया।

छिरेंटावासियों ने पोखर गहरीकरण के लिये किया सामूहिक श्रमदान

ग्वालियर । वर्षा जल सहेजने एवं पुरानी जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार के उद्देश्य से ग्वालियर जिले में भी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा के अनुरूप ÷जल गंगा संवर्धन÷ अभियान चलाया जा रहा है। खासतौर पर ग्रामीण अंचल में जन अभियान परिषद भी ग्रामीणों को अभियान से जोड़कर जल संरक्षण व संवर्धन के लिये जागरूक किया जा रहा है। इस कड़ी में बुधवार को भितरवार जनपद पंचायत के ग्राम छिरेंटा की पोखर के गहरीकरण के लिए एसडीएम डीएन सिंह की अगुआई में ग्रामीणों ने सामूहिक श्रमदान किया। इस अवसर पर ग्रामीणों के साथ जल गंगा संवर्धन अभियान को लेकर सार्थक संवाद हुआ। साथ ही ग्रामीणों को अधिक से अधिक पौधे रोपने, पर्यावरण संरक्षण व जैविक खेती के लिये भी प्रोत्साहित

किया गया।

श्रमदान के दौरान एसडीएम डीएन सिंह ने कहा कि जल पंच महाभूतों में से एक है। इसीलिए कहा जाता है कि जल है तो कल है। इसलिए पानी की एक-एक बूँद को संरक्षित करने में ही हम सबकी भलाई है। उन्होंने इस अवसर पर किसानों से ग्रीष्मकालीन धान की फसल के स्थान पर कम पानी में अधिक पैदावार होने वाली मूँग की फसल लेने का आह्वान किया। जन अभियान परिषद के संभागीय समन्वयक सुशील बरूआ ने गाँव की प्रस्फुटन समिति से जुड़े कार्यकर्ताओं सहित श्रमदान के लिये आगे ग्रामीणों का आह्वान किया कि वे जल संरक्षण के साथ-साथ सुरक्षा के पुख्ता इंतजामों के साथ पौधे भी रोपें, जिससे पर्यावरण अच्छा बना रहे। उन्होंने जन अभियान परिषद द्वारा स्थापित कराई गई पाठशाला, मल्लशाला, गौशाला तथा संस्कार शाला से जुड़े युवाओं से छिरेंटा गाँव को आदर्श ग्राम बनाने के लिये एकजुट होने को कहा। साथ ही ऊर्जा संरक्षण, महिला सशक्तिकरण व नशामुक्ति के साथ गाँव को विवादरहित बनाने पर भी बल दिया। कार्यक्रम के दौरान जन अभियान परिषद की नवांकुर संस्था ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति छिरेंटा के जन सूचना केन्द्र, वाचलानय व संस्कार केन्द्र का अवलोकन भी एसडीएम डीएन सिंह व संभागीय समन्वयक सुशील बरूआ ने किया। साथ ही गाँव में जन अभियान परिषद के सहयोग से शुरू किए गए निरूशुल्क कोचिंग सेंटर का फीता काटकर शुभारंभ भी किया।

सकल हिंदू समाज 30 को परशुराम पालकी यात्रा निकालेगा

ग्वालियर । सकल ब्राह्मण महासमिति के तत्वाधान में भगवान परशुराम पालकी यात्रा समिति के द्वारा सकल हिंदू समाज 30 अप्रैल को श्रीराम मंदिर फलका बाजार से सुबह 9 बजे से भगवान परशुराम की पालकी यात्रा निकालेगा। यह यात्रा सनातन धर्म मंदिर पर पहुंचकर संपन्न होगी। भगवान परशुराम पालकी की कोर कमेटी की बैठक मुख्य संयोजक तीरथ मिश्रा के निवास पर संस्थापक डॉ जयवीर भारद्वाज की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

कोर कमेटी की बैठक में निर्णय लिया गया कि भगवान परशुराम सभी समाजों के आराध्य हैं इसलिए सकल हिंदू समाज पूर्व की भांति इस वर्ष भी भव्यता के साथ भगवान परशुराम की पालकी निकालेगा। इसको लेकर सभी समाजों की बैठक 10 अप्रैल को सायं 4 बजे सनातन धर्म मंदिर पर आयोजित की गई है। बैठक में जानकारी दी गई कि प्राचीन भगवान परशुराम मंदिर नई सड़क से 27 अप्रैल को सप्त ऋषि यात्रा निकाल कर जामदारा पहुंचकर भगवान परशुराम के कर्मरस्थली से गंगाजल से अभिषेक कर परशुराम मंदिर घासमंडी मुरार में पहुंचेगी। महिला स्वागत अध्यक्षा श्रीमती अनीता रिछारिया, सप्त ऋषि यात्रा जमदारा का मुख्य संयोजक श्रीमती वंदना भूपेंद्र प्रेमी को बनाया गया है। संयोजक मनोज त्रिपाठी, योगेश दीक्षित रहेंगे। बैठक में बीना भारद्वाज, सुधा दीक्षित, वंदना भूपेंद्र प्रेमी, अनीता रिछारिया, राधा शर्मा, अंजू दीक्षित, सोनू बाजपेई, हेमंत एडिशन शर्मा, नितिन मिश्रा, राजेश मिश्रा, श्यामबाबू शर्मा, देवेंद्र कुमार पाठक, वैभव दीक्षित, सुमित सिंह भी उपस्थित थे। बैठक का संचालन भगवान परशुराम पालकी यात्रा के अध्यक्ष सतीश शर्मा केदारपुर वालों ने किया। आभार समिति के अध्यक्ष प्रकाश नारायण शर्मा ने किया।

सम्यक जैन ने उत्तीर्ण की एम.बी.बी.एस. फाइनल ईयर की परीक्षा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। अम्बाह निवासी सम्यक जैन पुत्र श्री संजीव कुमार जैन (बॉबी) नाती स्व. जयचन्द जैन ने एम.बी.बी.एस. फाइनल ईयर की परीक्षा मध्य प्रदेश मेडीकल साइंस यूनिवर्सिटी जबलपुर से उत्तीर्ण की है। सम्यक जैन की इस सफलता पर उनके परिजनों, इष्ट मित्रों आदि ने हार्दिक बधाई दी है। अपनी इस सफलता पर सम्यक जैन ने कहा कि मेरे माता-पिता, गुरूजनों का इस सफलता में बहुत बड़ा हाथ है। उन्होंने अन्य विद्यार्थियों को अपना संदेश देते हुए कहा कि वे लक्ष्य बनाकर अध्ययन करें, सफलता उन्हें अवश्य मिलेगी।

चराईडांग में होगा बहुउद्देश्यीय केन्द्र का निर्माण

ग्वालियर । जिले के विकासखंड घाटीगाँव के आदिवासी बहुल ग्राम चराईडांग में पीएम जनमन योजना के तहत मल्टीपरपज सेंटर (बहुउद्देश्यीय केन्द्र) बनने जा रहा है। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार ने इस केन्द्र के लिये आवंटित जमीन का बुधवार को निरीक्षण किया। साथ ही केन्द्र का काम जल्द से जल्द शुरू कराने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिए। भ्रमण के दौरान जिला पंचायत सीईओ विवेक कुमार ने ग्रामीणों से जल गंगा संवर्धन अभियान पर भी चर्चा की। उन्होंने अभियान के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। साथ ही अभियान के तहत वृहद स्तर पर जल संरक्षण का कार्य करने एवं मिलजुलकर गाँव की जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा इस कार्य में शासन स्तर से मदद दिलाई जायेगी। इस अवसर पर एसडीएम घाटीगाँव राजीव समाधिया मौजूद थे।

निषाद राज की जयंती पर कांग्रेस ने शरबत बांटा

ग्वालियर। निषाद राज की जयंती के अवसर पर फिशरमेन कांग्रेस द्वारा फूलबाग चौराहा पर शरबत वितरण किया। कार्यक्रम में जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा ने निषाद राज के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए कहा कि निषाद राज वह महापुरुष थे जिन्होंने भगवान श्रीराम के वनवास के समय सच्चे मित्र, सहयोगी और मार्गदर्शक की भूमिका निभाई थी। जब पूरी अयोध्या श्रीराम के वनगमन से शोकाकुल थी, तब निषाद राज ने न केवल उनका स्वागत किया, बल्कि अपने सेवाभाव से उन्हें आगे का मार्ग भी प्रशस्त किया। वहीं कार्यक्रम के दौरान शरबत बांटा गया। कार्यक्रम में ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष प्रभूदयाल जौहरे, कार्यवाहक अध्यक्ष महाराज सिंह पटेल, सरमन राय, जयराज सिंह चौहान, पियूष जैन, राकेश बाथम, राजू बाथम, प्रभूदयाल बाथम, राहुल भदौरिया, राहुल बाथम उपस्थित थे।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए मै. गुरुकृपा प्रकाशन प्रेस ,टी.आई.टी कॉम्पलेक्स मुरैना से मुद्रित एवं हिन्दुस्तान एक्सप्रेस परिसर नवीन नगर निगम मुख्यालय के सामने सिटी सेंटर ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। R.N.I. No. MP HIN/2007/ 18763
सम्पादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे, स्थानीय संपादक संजय त्रिपाठी सभी विवादों का न्याय क्षेत्र ग्वालियर न्यायालय होगा। फोन: 0751-2234001 मो. 94251-26060, 9425360435